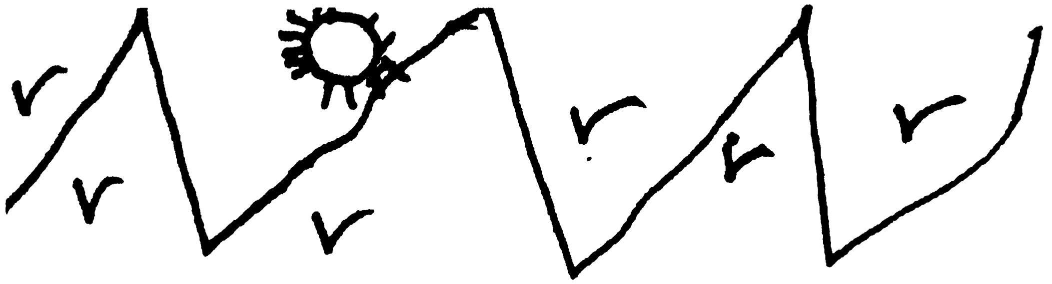

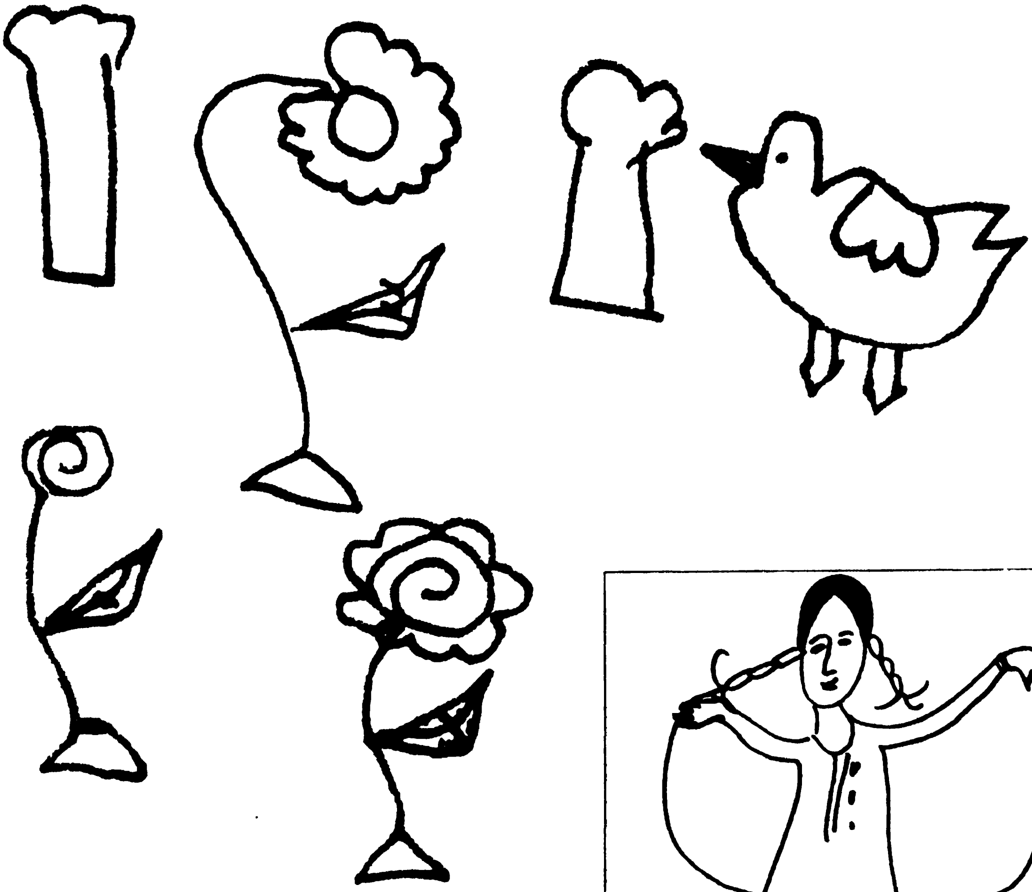

मेघा जैन, पहली, भोपाल, म. प्र.

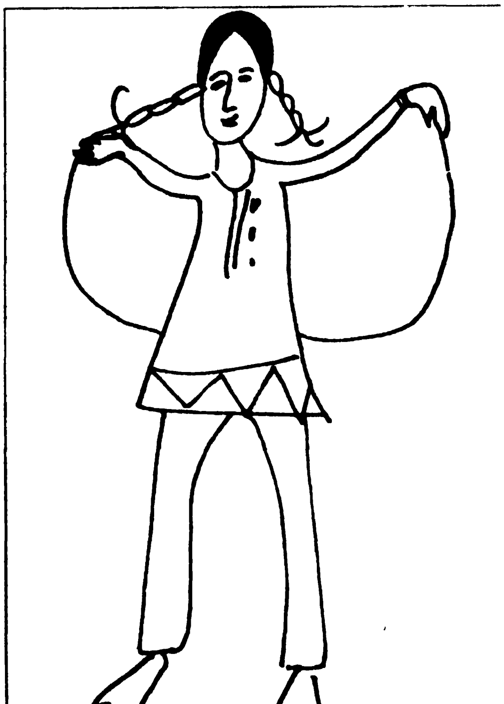

● नाम, पता नहीं लिखा है

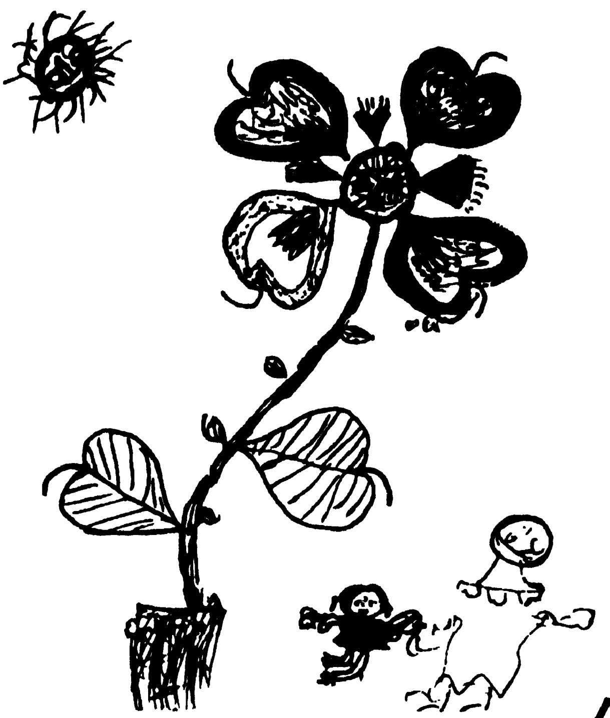

कला हमार

सब से न्यारा
सब से प्यारा
हरा पीला और
चुनरी लाल
कला हमार

● रुकमणि यादव, छटवीं, छतरपुर, म.प्र.

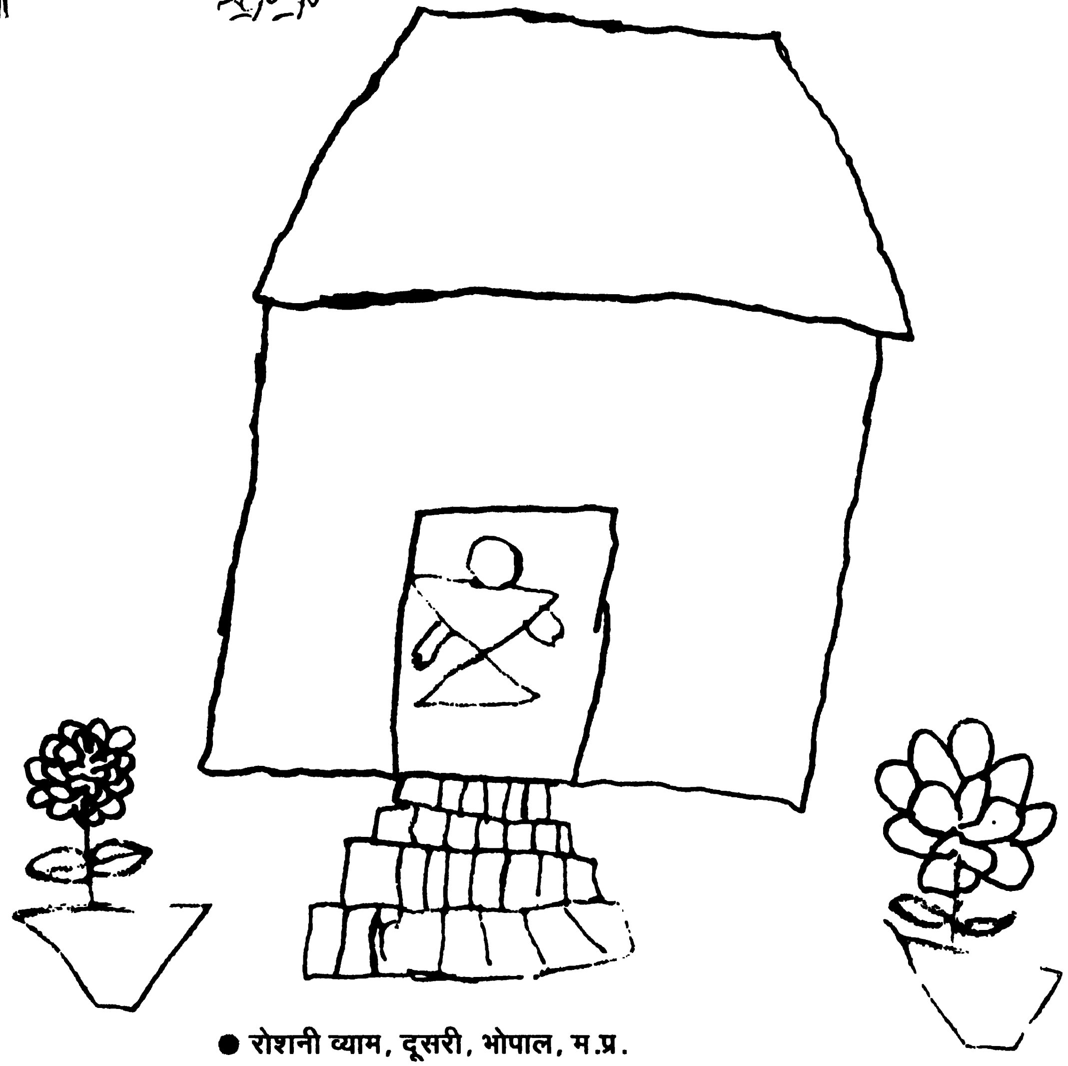

● रोशनी व्याम, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

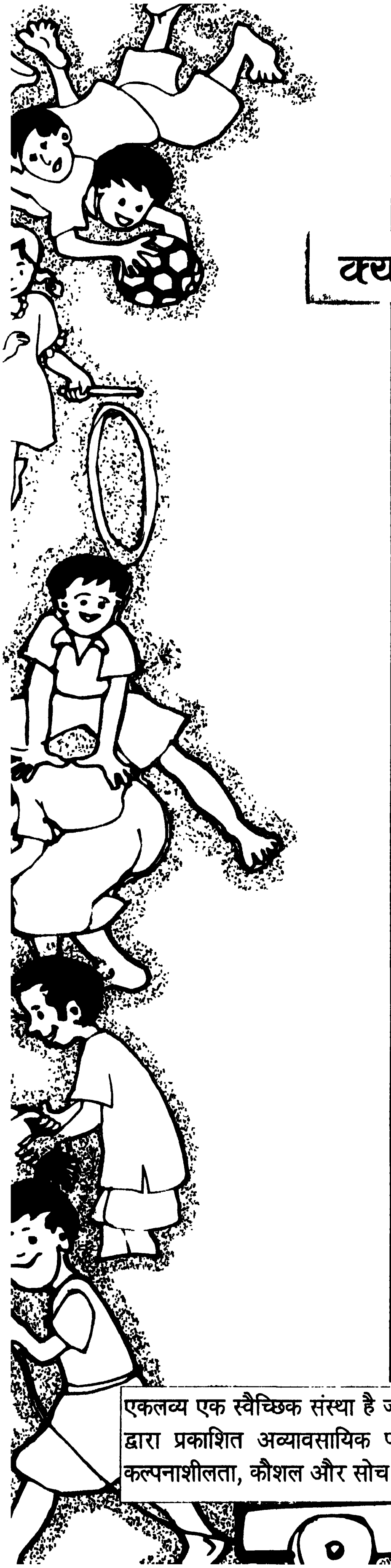

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-19 अंक-3 सितम्बर 2003

क्या-क्या है इस अंक में

कहानी

विशाल मगर	13
इसमें क्या शक है	24

कविताएँ

घर	20
गिलहरी	31

प्रयोग

जादुई डिब्बा	19

विशेष लेख

बेघर बच्चों का घर	10
डाक टिकिटों के बहाने	39

हर बार की तरह

इस बात की बात	2
मेरा पन्ना	4
सवालीराम	22
चित्र पहेली	26
चकमक समाचार	28
खेल समाचार	30
माथा-पच्ची	32
मजेदार खेल	38

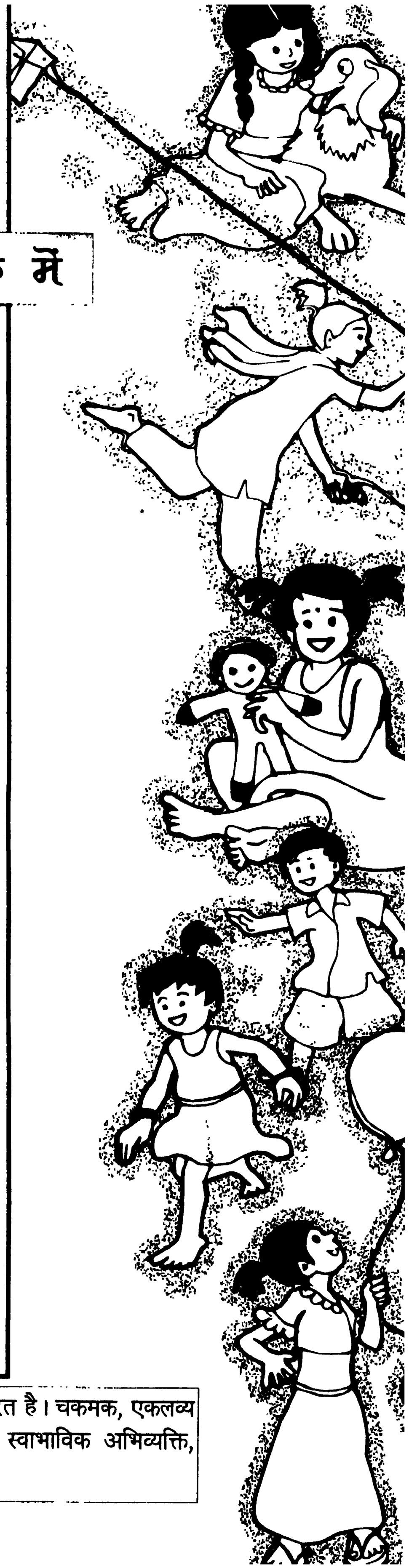

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार शिक्षक दिवस पर . . .

तोत्तोचान ने अपने जीवन में इतनी मेहनत कभी नहीं की थी। क्या दिन था वह भी! जब उसका चहेता बटुआ पाखाने में गिर गया था। ना.... उसमें पैसे नहीं थे। पर तोत्तोचान को अपना बटुआ बहुत प्यारा था। लाल पीले हरे चेक का बना हुआ आयताकार और चपटा! उसके ऊपरी तिकोन पर कढ़ा था एक रुपहला कुत्ता, जो बिल्कुल किसी जड़ाऊ पिन सा लगता था।

तोत्तोचान की एक विशेष आदत थी। जब वह छोटी थी तभी से वह पाखाना जाने पर ज़रूर उसके छेद में झाँकती थी। उन दिनों पाखाने में बस एक बड़ा सा छेद होता था और नीचे होती थी एक हौदी। अकसर उसकी टोपियाँ हौदी में तैरती छूट जाती थीं। माँ उसे हर बार नीचे झाँकने से मना करती थी।

उस दिन सुबह-सुबह वह पाखाना गई और माँ की बात भूल गई। हाथ में थामे बटुए की पकड़ बस थोड़ी ही ढीली हुई होगी। बटुआ हाथ से सरका और हौदी में जा गिरा। नीचे अंधेरे में बटुए को यूँ गुम होते देख तोत्तोचान के मुँह से चीख निकल गई।

तोत्तोचान न रोना चाहती थी और न अपना बटुआ खोना। उसने चौकीदार के छप्पर से लम्बे हत्थे वाली एक बड़ी कड़छी निकाली। हत्था तोत्तोचान से दुगुना बड़ा था। उसे घसीटती हुई वह स्कूल के पिछवाड़े पहुँची और हौदी का छेद ढूँढने लगी। काफी देर बाद कोई गज भर दूर उसे कंक्रीट के ढकने से ढँका एक बड़ा-सा छेद मिला। काफी कठिनाई से ढक्कन हटाने के बाद उसे पता चला कि यही वह छेद है जिसे वह ढूँढ रही थी।

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष-19 अंक-3 सितम्बर 2003

सम्पादन

विनोद रायना

कविता सुरेश

टुलटुल विश्वास

सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श

सुशील जोशी

वितरण

कमल सिंह

मनोज निगम

सहयोग

राकेश खत्री

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य

ई-7/ एच आई जी – 453

अरेरा कॉलोनी,

भोपाल - 462 016 (म.प्र.)

फोन : 2463380

eklavyamp@mantrafreenet.com

कवर का कागज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

'अरे यह हौदी तो कुहोन्बुत्सु के ताल जितनी बड़ी है,' उसने आश्चर्य से कहा। सबसे पहले उसने वहाँ बटुआ ढूँढना चाहा जहाँ उसके अंदाज़ से बटुआ गिरा था। पर हौदी अंधेरी, गहरी और बहुत बड़ी थी। उसने फैसला किया कि वह गंदगी बाहर निकालकर बटुआ ढूँढेगी।

कड़छी से गंदगी निकालकर, वह हर बार उसे ध्यान से देखती कि उसमें बटुआ तो नहीं है। जब उसने ढूँढना शुरू किया तो उसे कतई अनुमान नहीं था कि उसे इतना समय लगेगा। स्कूल का घण्टा भी बज गया। 'अब क्या करें,' उसने सोचा तो ज़रूर। पर अब जब वह इतना आगे बढ़ चुकी थी तो खोज बन्द करने से भी क्या लाभ होता। वह दुगुनी शक्ति से गंदगी बाहर उलीचने लगी।

अचानक हेडमास्टर जी पास से गुज़रे। तब तक गंदगी का काफी बड़ा ढेर इकट्ठा हो गया था। 'यह तुम क्या कर रही हो?' उन्होंने तोत्तोचान से पूछा। 'मैंने अपना बटुआ गिरा दिया।' तोत्तोचान ने गंदगी निकालते हुए ही कहा क्योंकि वह एक भी पल गँवाना नहीं चाहती थी। 'ओह तो ये बात है,' कहकर हेडमास्टर जी आदत के अनुसार अपने हाथ पीछे बाँधे आगे को चल दिए।

काफी समय गुज़र गया पर बटुआ था कि मिलता ही नहीं था। और वह बदबू और गंदगी का ढेर बढ़ता ही जा रहा था। अब हेडमास्टर जी फिर लौटे। 'मिल गया तुम्हारा बटुआ?' हेडमास्टर जी कुछ पास आए और मित्र के अंदाज़ में बोले। 'जब तुम्हारा काम हो जाएगा, तब तुम यह सब वापिस हौदी में डाल देने वाली हो न!' कहकर जैसे वे पहले चले गए थे, इस बार भी चले गए। 'हाँ,' तोत्तोचान का प्रफुल्ल उत्तर आया।

'कितने अद्भुत थे हेडमास्टर जी!' तोत्तोचान की माँ ने यह घटना सुन, मन ही मन सोचा था।

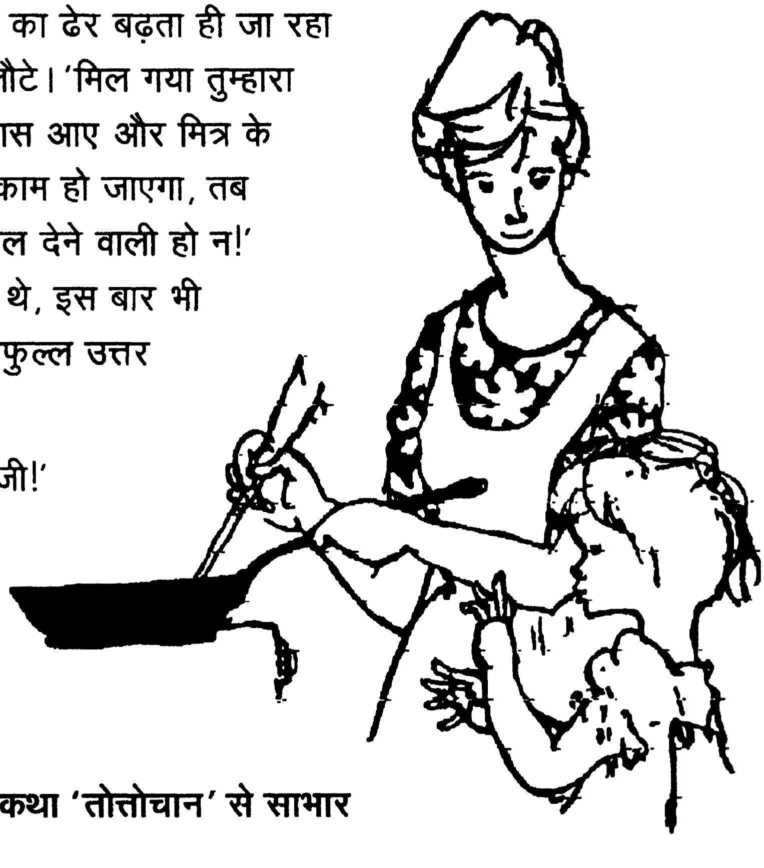

तेत्सुको कुरोयानागी की आत्मकथा 'तोत्तोचान' से साभार

मेरा पन्ना

ये चाँद

बहुत माथापच्ची की
पर कुछ समझ में नहीं आया
फिर दादाजी से पूछा
यह चाँद कहाँ से आया
करवट लेकर धीरे से
दादाजी हँसकर बोले
यह चाँद धरती का टुकड़ा है
पहना उसने रवि किरणों का चोला

● सीपी धनंजय, भोपाल, म.प्र.

पहेलियाँ

एक

छोटे से हैं गोलू राम।
कपड़े पहने सौ पचास॥

दो

होता कागज़, खाता कागज़।
ले जाता और लाता कागज़॥

तीन

हाथ है हरा, मुँह है लाल।
क्या चीज़ है, बताओ तत्काल!

चार

लाल गाय, खाना खाए,
पानी पीए, मर जाए।

प्रस्तुति ● अनुराग तिवारी, पाँचवीं, सेण्ट फ्रांसिस कॉलेज, लखनऊ, उ.प्र.

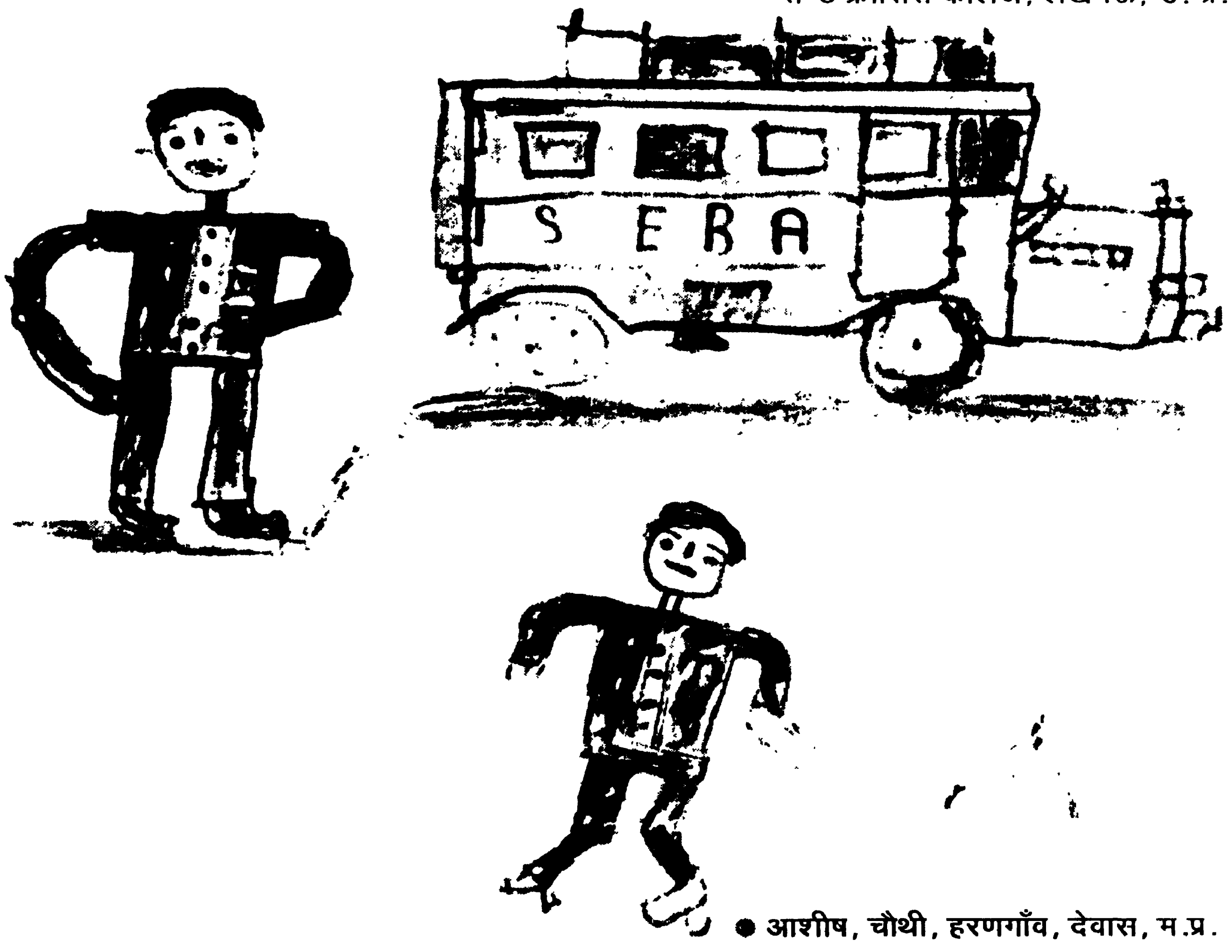

● आशीष, चौथी, हरणगाँव, देवास, म.प्र.

चित्र ● रोजा मिश्रा, पहली, (पता नहीं लिखा है)

बसंत

फूल खिल रहे हैं
पक्षी चहचहा रहे हैं
आकाश ताजी चमक से नहा रहा है
अंदाजा लगाओ ये कौन सा मौसम है
हाँ, ये बसंत है!

● करनदीप, पाँचवीं, चण्डीगढ़, हरियाणा

बर्फ का गोला

एक दिन मैं और मेरी बहिन बर्फ का गोला खाने गए। गोला खा लिया। गोले वाले ने पैसे माँगे। हमने जेब में देखा, पैसे हम घर पर ही भूल आए थे।

हम घर भी नहीं जा सकते थे क्योंकि घर बहुत दूर था। गोले वाले ने हमें प्लेट धोने बिठा दिया। छह बजे से लेकर नौ बजे तक हमें प्लेटें धोनी पड़ीं। फिर घर गए। मम्मी ने पूछा इतनी देर कहाँ लगा दी। हमने सारी घटना सुना दी। सब हँस पड़े।

● अंकिता पंड्या, पादरा, बड़ौदा, गुजरात

● राजेश कुशवाह, छटवीं, खातेगाँव, हरदा, म.प्र.

एक खबर

कल यह खबर कालोनी में फैली कि एक लड़की जो दसवीं में थी, फेल होने पर उसने आत्महत्या कर ली। और वो खबर आज अखबार में भी आ गई। जब अखबार पढ़ा तब पता चला वो विजयनगर में रहती थी।

मैंने सोचा ये तो एक पागलपन है। अगर एक बार सफल नहीं हुए तो दूसरी बार कोशिश करनी चाहिए। कोशिशें कई बार में सफल होती हैं। लेकिन एक पल के लिए लगा, हो सकता है इसके पीछे कोई दूसरा कारण हो। जैसे या तो अपने किसी सहयोगी को लेकर हीन भावना या माता पिता की डाँट का डर। अक्सर ऐसी घटनाएँ ऐसे ही कारणों से होती हैं। उस व्यक्ति को लग सकता है कि वह अपने से छोटे विद्यार्थियों के साथ कैसे पढ़ेगा। उसके दोस्त उसे किस नज़र से देखेंगे। या फिर माता पिता का ज़ोर होता है कि तुम्हें इतने नम्बर से पास होना है। और वो नहीं आ पाते इसलिए ऐसी घटनाएँ घटती हैं।

मुझको लगता है कि माता पिता को भी अपने बच्चों से ऐसी अपेक्षाएँ नहीं करनी चाहिए। और उस बच्चे को अपनी ओर से ही कोशिश करनी चाहिए।

● स्वाति परिहार, स्कूल ऑफ एक्सीलेंस, देवास, म.प्र.

मेरा शेरू

मैं जब मामा के घर गया तो पहली बार बड़ा भारी लोमड़ी जैसा दिखने वाला एक कुत्ता मेरे ऊपर झपटा। मैं 'मम्मी...' करके रोया और मामा को पकड़ा। मुझे क्या पता था कि वह मामा को हाथ लगाने पर गुस्सा होता है। फिर तो उसने मेरी हाफ पैण्ट पकड़कर खींची। मैं जोर से चिल्लाया। मेरी नानी ने उसे डाँटा। मैं जैसे ही सोफे पर बैठा तो उसने मेरे ऊपर छलाँग लगाई। मुझे उसके नाखून लगे। मैं वहाँ से उठा क्योंकि मामा ने कहा कि यह शेरू की जगह है। मैं बहुत डरा हुआ था। मैंने मम्मी से कहा घर वापस चलो। सबने मुझे समझाया।

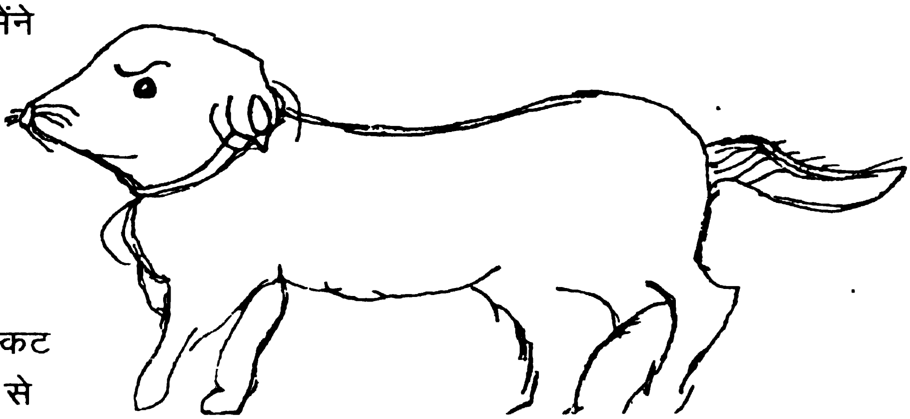

फिर मामा ने मेरी दोस्ती शेरू से कराई। उसे मैंने बिस्किट दिया। हम दोनों बॉल से खेले। अब तो वह मेरा सबसे अच्छा दोस्त है। जब भोपाल से हम फलटण आ रहे थे, तो मेरा मन यहाँ आने को नहीं कर रहा था। शेरू को भी साथ लाने का मन था। पर मुझे अकेले आना पड़ा। आते समय मैंने उसे एक नई बॉल दी। तब मुझे बहुत रोना आया। अब जब मैं मामा के घर फोन लगाता हूँ तो वह भौ भौ करता है। कहता है 'तू इधर आ!'

कहानी एवं चित्र ● विराज तावरे, तीसरी, (पता नहीं लिखा है)

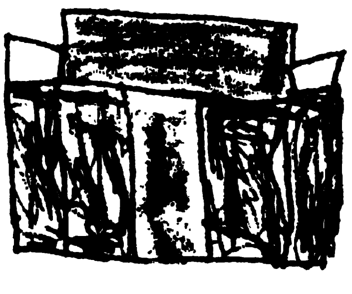

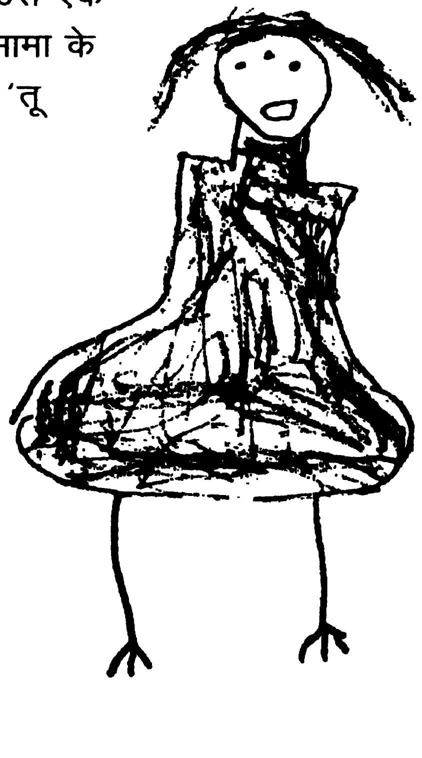

रमा, तीसरी, भोपाल, म.प्र.

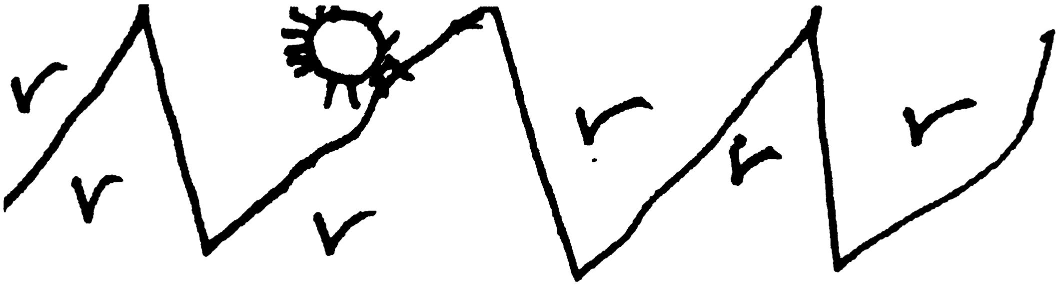

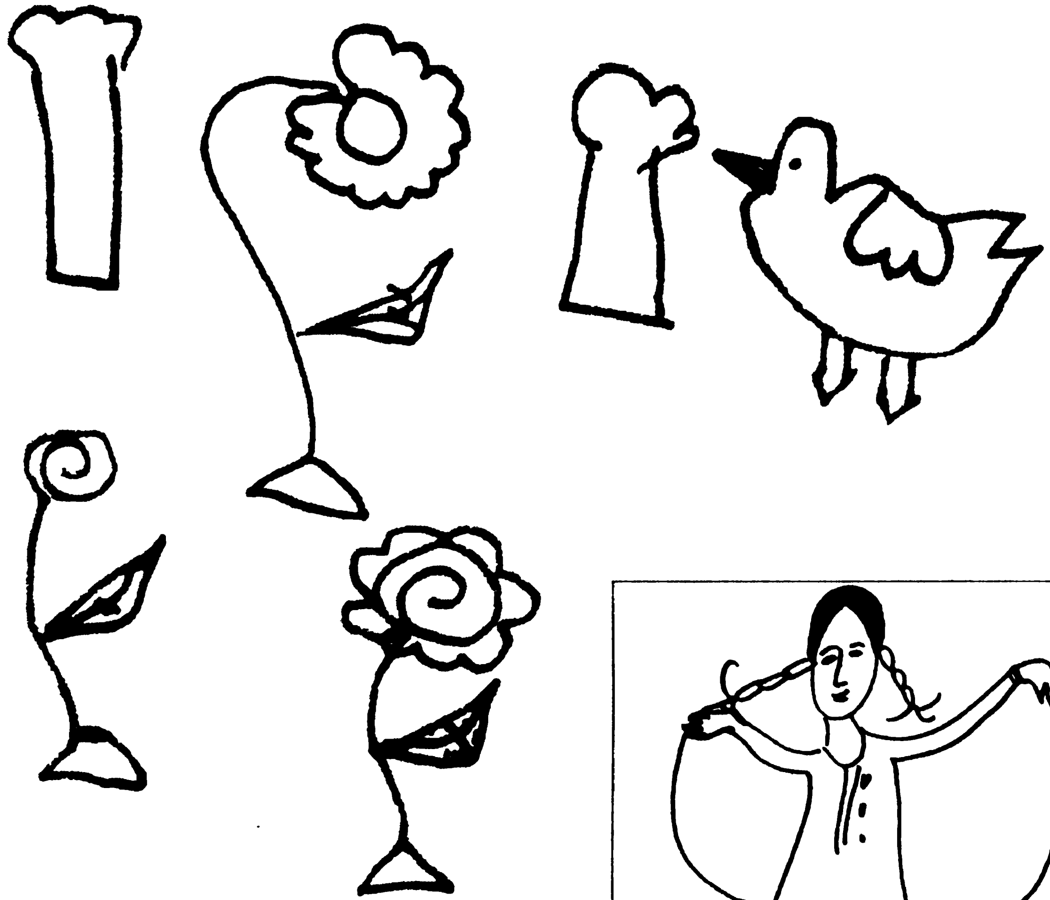

मेघा जैन, पहली, भोपाल, म. प्र.

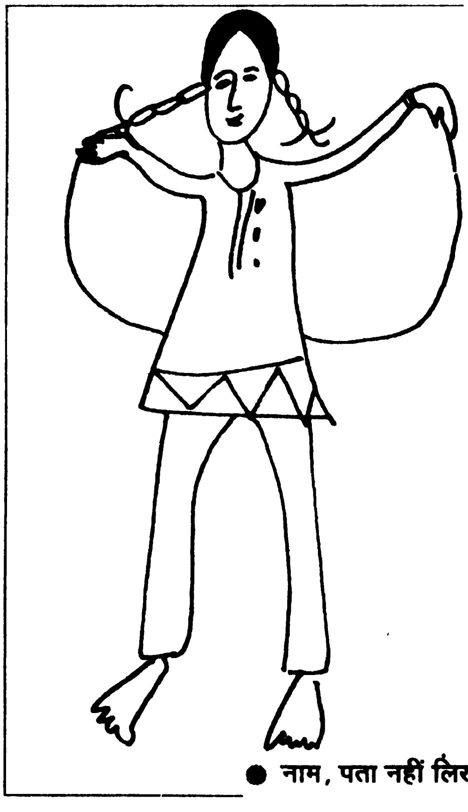

● नाम, पता नहीं लिखा है

कला हमार

सब से न्यारा
सब से प्यारा
हरा पीला और
चुनरी लाल
कला हमार

● रुकमणि यादव, छटवीं, छतरपुर, म.प्र.

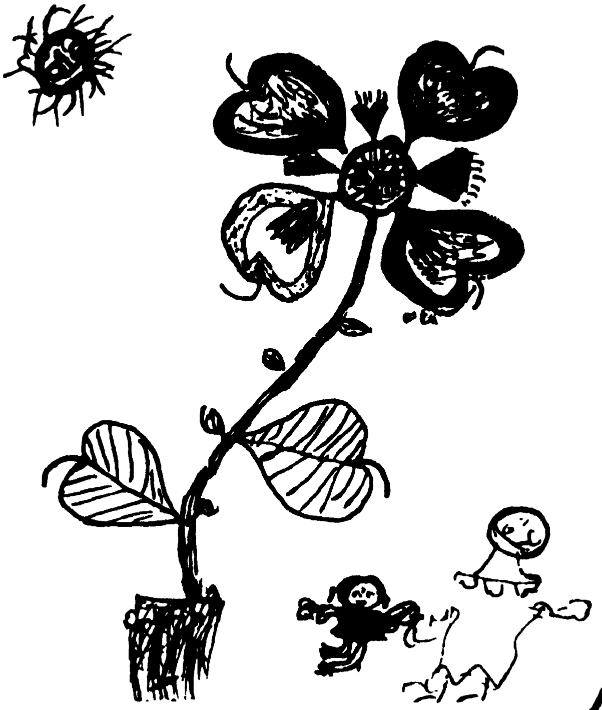

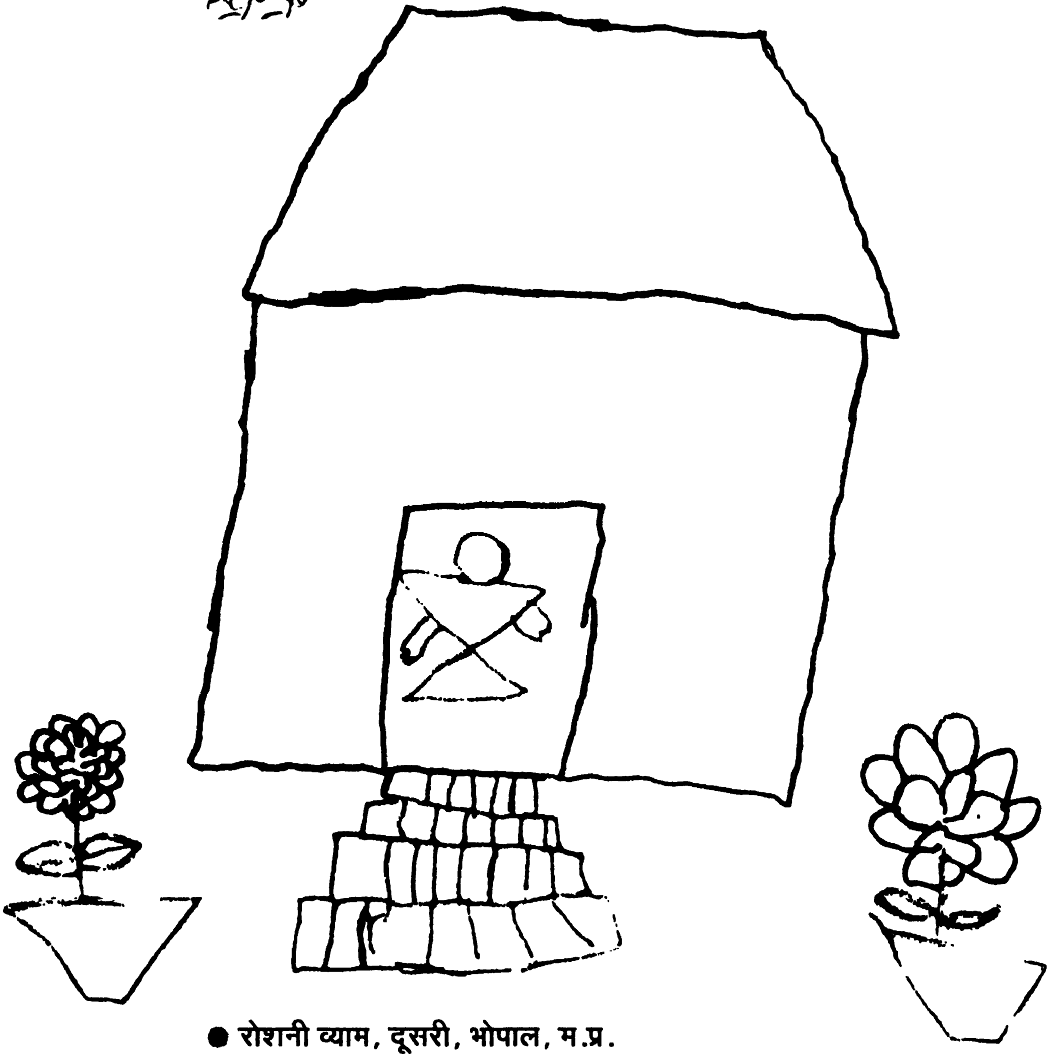

● रोशनी व्याम, दूसरी, भोपाल, म.प्र.

बेघर बच्चों का घर

शिवनारायण गौर

जब कभी तुम अपने घर से बाहर जाते हो तो सड़कों, रेलगाड़ी या ऐसे ही अन्य स्थानों पर कई बच्चे मिलते होंगे। ऐसे बच्चों से भी तुम्हारी मुलाकात हुई होगी जो भीख माँगते हों या फिर ट्रेनों में झाड़ू लगाते हुए दिखाई देते हों।

ये ऐसे बच्चे हैं जो घर व परिवार के प्यार से वंचित हैं। अलग-अलग कारणों से वे बेघर हो गए हैं। अब सड़क पर या चलती ट्रेनों पर उनकी अपनी अलग ही दुनिया बन गई है। यहाँ कोई भी, कभी भी उन्हें डाँटता-फटकारता रहता है। प्यार करने वाले या इज़्ज़त से बात करने वाले लोग कम ही मिलते हैं।

पिछले दिनों ऐसे ही कुछ बच्चों से हमने बात की। इन बच्चों से हम इटारसी शहर में जीवोदय नाम की एक संस्था में मिले। यहाँ रहने वाले कुछ बच्चों ने चकमक को अपने जीवन के बारे में बताया। क्या तुम नहीं जानना चाहोगे इनके बारे में?

तेजू की उम्र तेरह साल है। जब वह बहुत छोटा था तब ही उसके पिता की मृत्यु हो गई। बाद में उसकी माँ ने दूसरी शादी कर ली। सौतेला पिता तेजू को परेशान करता था। तेजू ने गुस्से में घर छोड़ दिया और एक होटल में काम करने लगा। कुछ दिन होटल में काम करने के बाद वह ट्रेनों में झाड़ू लगाने का काम करने लगा। ट्रेन में ही उसे किसी ने जीवोदय के बारे में बताया। वह अब जीवोदय में रह रहा है। यहाँ रहकर वह पढ़ाई भी कर रहा है। तेजू कहता है, ''यहाँ से कहीं जाने की इच्छा नहीं होती है।''

आठ साल के अशोक की कहानी भी कुछ इसी तरह की है। अशोक की माँ नहीं है। पिता बीड़ी-सिगरेट बेचते हैं। घर की परेशानी से भागकर अशोक रेलगाड़ियों में झाड़ू लगाने का काम करने लगा था। कुछ बच्चे उसे जीवोदय ले आए। अशोक

अब दूसरी कक्षा में पढ़ रहा है। अशोक कहता है, "जब ट्रेनों में झाड़ू लगाता था, तीस रुपये रोज़ कमाता था।" लेकिन यहाँ आकर वह बहुत खुश है।

बारह साल का अल्फ़ाज़ कुरैशी गोंदिया का रहने वाला है। उसके पिता नहीं हैं। उसकी माँ होटल पर काम करती है। माँ ने उसे मौसी के घर छोड़ दिया था। मौसी के घर अल्फ़ाज़ को अच्छा नहीं लगा। वह मौसी के घर से भागकर स्टेशन पर रहने लगा। अल्फ़ाज़ स्टेशन पर पानी की बॉटल बेचने का काम करता था। अचानक एक दिन अल्फ़ाज़ की मुलाकात फ़िलिप से हुई। फ़िलिप ने जीवोदय के बारे में बताया। अल्फ़ाज़ जीवोदय आ गया। वह यहाँ रहकर पाँचवी कक्षा की पढ़ाई कर रहा है। उसे यहाँ अच्छा लगता है। सबके साथ रहना, खाना, खेलना - यह सब घर परिवार जैसा माहौल उसे खूब आनन्द देता है।

तेजू, अशोक और अल्फ़ाज़ के जैसी ही कहानी जीवोदय में रहने वाले हुसैन, बृजेश, राजीव, राजकुमार, मोहम्मद इम्तियाज़ जैसे करीब तीस बच्चों की है।

जीवोदय के संचालन से जुड़ी सिस्टर क्लारा ने हमें इस संस्था और इसके काम के बारे में बताया। सिस्टर क्लारा मानती हैं कि बच्चों को अपने जीवन की अच्छी शुरुआत का समान मौका मिलना चाहिए। बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए पढ़ना व सीखना भी ज़रूरी है। इसके लिए बच्चों को अच्छा वातावरण मिलना चाहिए। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर जीवोदय की स्थापना की गई है। इस संस्था की शुरूआत वर्ष 1996 में इटारसी रेलवे स्टेशन के सायकल शेड से हुई। काम शुरू करने के पहले प्लेटफॉर्म के बच्चों का सर्वेक्षण किया गया। उनकी दिनचर्या का अध्ययन भी किया गया।

सिस्टर कहती हैं, "अध्ययन के दौरान हमने पाया कि ये बच्चे जीवन के लिए बहुत संघर्ष करते हैं। जीवनयापन करने के लिए ये बच्चे पानी की बॉटल, गुटखा, बीड़ी-सिगरेट आदि बेचते हैं। या फिर ट्रेनों में झाड़ू लगाते हैं, भीख माँगते हैं। रात में वे पुल के नीचे या फिर प्लेटफॉर्म पर सो जाते हैं। इन बच्चों के रहने की कोई स्थाई जगह नहीं है।"

इस अध्ययन के बाद पाँच से चौदह साल के ऐसे बच्चों के लिए जीवोदय ने काम करने की योजना बनाई। सबसे पहले बच्चों को स्लेट-कलम दी गई। उन्हें अपना नाम लिखना सिखाया। उन्हें खेल व मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराए।

शुरु के दिनों में इन बच्चों का विश्वास जीतना मुश्किल काम लगा। समाज से त्रस्त ये बच्चे सही बोलने से डरते हैं। वे अपना नाम या खुद के बारे में कोई भी जानकारी मन से बना-बनाकर बता देते हैं। काफी समय के बाद बच्चों को जीवोदय पर विश्वास हुआ।

स्टेशन पर रहने वाले ये बच्चे घुमन्तु आदत वाले होते हैं। वे कभी भी जीवोदय से भाग जाते हैं। पर जल्दी ही वापस भी आ जाते हैं। इन बच्चों की औपचारिक शिक्षा का कोई प्रमाण नहीं होता है। और न ही उनकी उम्र का कोई प्रमाण। ऐसी स्थिति में एक बड़ी समस्या यह होती है कि उन्हें किस कक्षा में प्रवेश दिलाया जाए? उनकी जन्मतिथी का पता कैसे चले?

छाया : शिवनारायण गौर

लेकिन इन सब समस्याओं का हल भी हुआ। होशंगाबाद ज़िले के उस समय के सरकारी अधिकारियों ने जीवोदय को शासकीय मान्यता दे दी। इससे बच्चों की पढ़ाई में मदद मिली। कई बच्चे जिनकी जन्मतिथी की कोई जानकारी नहीं थी, उन का डाक्टरी परीक्षण कराया गया। इस जाँच के आधार पर उनकी उम्र तय करके सरकारी तथा प्रायवेट, दोनों तरह के स्कूलों में बच्चों को प्रवेश दिलाया गया।

अब जीवोदय के बच्चे आम बच्चों की तरह ही स्कूल जाते हैं। उनके पास रहने का अपना घर है। वे एक साथ खेलते और लड़ते-झगड़ते हैं। रविवार छुट्टी का दिन होता है। वे इस दिन का पूरा उपयोग करते हैं। कभी-कभी वे घूमने भी निकल जाते है। पर हाँ, उनका घूमना ज़रा अलग तरह का होता है। वे बाज़ार या पार्क में घूमने नहीं जाते हैं। किसी दूसरे शहर ही चल देते हैं! वह भी किसी एक्सप्रेस ट्रेन से!!

रेलगाड़ी इन बच्चों के जीवन में रची-बसी है। ये ट्रेनों के बारे में बड़ी तकनीकी भाषा में बातचीत करते हैं। उन्हें पता है कि 1356 कौन सी गाड़ी का नंबर है। वे जानते हैं कि 2138 कहाँ जाएगी। और तो और, वे यह भी जानते हैं कि फलाँ गाड़ी के फलाँ कोच में टिकिटों की जाँच करने कौन आने वाला है!

जीवोदय के ये बच्चे बहुत साहसी हैं। वे दिन भर कई तरह के लोगों से मिलते हैं। इसलिए उन्हें लोगों की पहचान करना भी आता है। किस व्यक्ति से उन्हें पैसा मिलेगा, कौन उन्हें डाँटेगा, कौन प्यार से बोलेगा, अपने जीवन के संघर्ष के दौर में वे यह सब सीख चुके हैं।

अब जब भी तुम्हें अपने आसपास कोई ऐसा बच्चा दिखे तो ऐसा मत समझना कि वो बुरा ही है। हालात ने उसे मजबूर किया होगा अपना घर छोड़ने को। अन्यथा वह भी सब बच्चों के जैसा ही रहना चाहता है। उसे भी ज़रूरत होती है प्यार की।

तुम्हें जब ऐसे बच्चे मिलते हैं, तो तुम क्या सोचते हो? उनके ऐसे हालात क्यों हैं? क्या वे खुद ज़िम्मेदार हैं इसके लिए? क्या ऐसे बच्चों से तुम दोस्ती करना चाहोगे? तुम्हारे मन में क्या है, हमें भी लिखना!

विशाल मगर

● रोअल्ड डाह्ल

गंदले पानी की एक बड़ी-सी नदी और उस पर दो मगरों के झाँकते सिर! एक विशाल, एक छोटू।

"जानते हो आज दोपहर मेरी क्या खाने की इच्छा है?" विशाल मगर चहका।

"क्या?" छोटू मगर उत्सुक हुआ।

"एक छोटा-सा बढ़िया-सा रसीला बच्चा।"

"छी:! मैं नहीं खाता बच्चे। एक तो वो कड़क होते हैं, और स्वाद में भी कड़वे होते हैं। मैं तो मछली ही खाता हूँ।" छोटू मगर ने कहा।

"बच्चे मछली से कहीं बड़े होते हैं। एक बार में ढेर-सा खाना मिल जाता है।" विशाल मगर बोला।

"लालची! तुम इस नदी के सबसे लालची मगर हो।" छोटू बोला

"मैं हूँ सबसे हिम्मतवाला मगर। मैं ही हूँ जो पानी से निकलकर जंगल से होता हुआ शहर में जाकर बच्चे खाने का साहस कर सकता है।" विशाल मगर बोला।

"तुम्हारा साहस सब बेकार जाएगा। तुम इतने बड़े और बदसूरत हो कि मीलों दूर से नज़र आ जाओगे। और बच्चे भाग जाएँगे। याद है न पिछली बार क्या हुआ था।"

"अरे भोंदू, इस बार मेरे पास एक आइडिया है," अपने बड़े चमकीले पैने दाँत निपोरता विशाल मगर बोला। "लो मैं चला, भूख जोर मार रही है। बाय...बाय!"

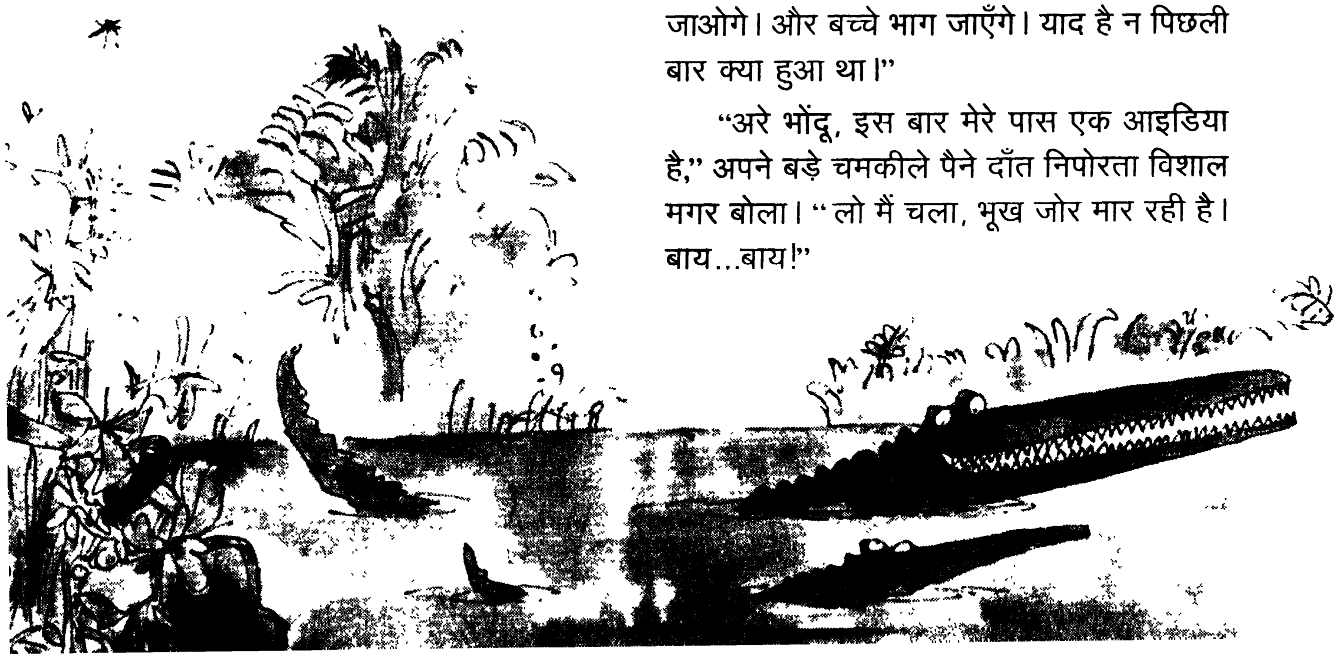

यह कहकर विशाल मगर पानी से निकला और जंगल की ओर बढ़ लिया। अभी कदम दो कदम बढ़ा ही था कि उसे नदी तीरे गोलू-मोलू गेंडा खड़ा मिला।

"क्या भैया, इस वक्त कहाँ चल दिए?" गेंडे ने जानना चाहा।

"पेट बहुत है खाली,
करनी पड़ेगी इसकी ख्याली,
चाहिए कोई चीज़ प्याली-प्याली।
बूझो तो भला!" मगर बोला।

"थोड़ा कुछ और बताओ...," सोचता-सा गेंडा बोला।

"वह प्यारी चीज़ दो टाँगों पर चलती है।" विशाल मगर बोला।

"क्या? क्या तुम्हारा इशारा बच्चों की ओर तो नहीं?" गेंडा घबराते हुए बोला।

"ठीक पहचाना।" मगर चहका

"गंदे, लोभी मगर। अच्छा हो कि तुम ही पकड़े जाओ और पकाकर तुम्हारा मगर-सूप बना दिया जाए।" गेंडा बोला।

मगर चला कुछ और आगे। वहाँ उसे मिला एक हाथी। पेड़ की पत्तियों को चर जाने में वह इस कदर मशगूल था कि उसे मगर के आने का पता ही न चला। मगर यह मौका हाथ से जाने कैसे देता। उसने हाथी की टाँग को अपने पैने दाँतों के बीच दबा दिया।

"अरे, यहाँ क्या कर रहा है नालायक। जा लौट जा अपनी गंदली नदी में।" हाथी चिंघाड़ा।

"मेरे पास कुछ गुप्त योजनाएँ हैं जिन्हें में आज़माने जा रहा हूँ।" मगर धीमे से बोला।

"यानी तुम्हारे दिमाग में शरारती ख्याल और शैतान चालें काम कर रही हैं। तुमने ज़िंदगी भर कोई ढंग का काम नहीं किया है।"

मगरमच्छ ने दाँत निपोरे.

"मैं चला खाने दोपहर का खाना।
हड्डियाँ कड़कने की तुम आवाज़ सुनना।"

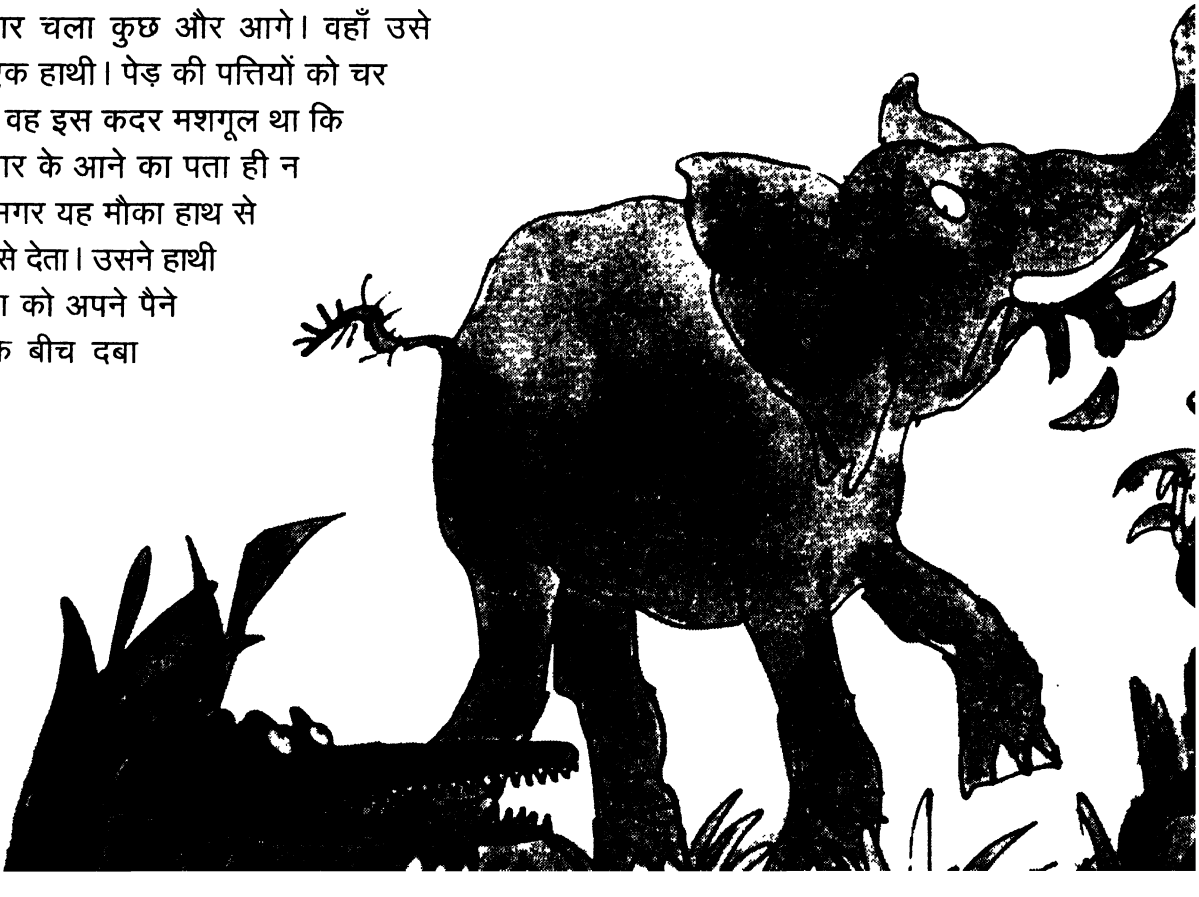

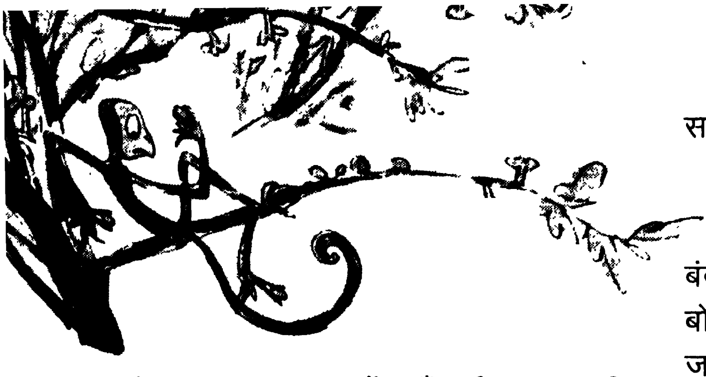

"ओ तुम पाजी राक्षस। मैं चाहूँगा कि तुम्हारा ही कचूमर बन जाए," हाथी ने कहा।

मगरमच्छ अनसुना कर ज़ोर से हँसा और जंगल में गायब हो गया।

कुछ ही आगे बढ़ा था कि एक पेड़ पर बैठा बंदर फलों के मज़े ले रहा था। मगर को देख वह बोला, " नमस्कार भैया! कहाँ चले?"

"कुछ चालें हैं जिन्हें आज़माने जा रहा हूँ," मगर बोला।

"भाई कुछ फल-फूल खाओगे?" बंदर ने पूछा।

"मेरे पास फलों से कहीं बेहतर चीज़ें हैं।" मगर बोला।

"मैं नहीं मानता इन फलों से बेहतर कुछ हो सकता है।" बंदर ने विश्वास से बोला।

"जिन्हें जा रहा हूँ मैं खाने
उनके पास हैं उँगलियाँ, हाथ और टाँगें!"

बंदर ने सुना तो पीला पड़ गया और लगा काँपने। बोला, "क्या तुम सचमुच मासूम बच्चों को निगलने जा रहे हो?"

"हाँ, कपड़ों समेत! ऐसे में वे बड़े स्वादिष्ट लगते हैं।"

"अरे ओ गिलगिले जीव। काश कि बटन और बकल तुम्हारे गले में फँस जाएँ और तुम्हारी साँस अटक जाए।" बंदर बोला।

"वैसे मैं बंदर भी खाना पसंद करता हूँ।" मगर बोला और बंदर के पेड़ के तने को चबा डाला। बंदर बेचारा! हड़बड़ी में दूसरे पेड़ की ओर लपका।

मगर हँसता हुआ आगे बढ़ गया।

जंगल का अंधेरा खत्म हुआ और शुरू हुआ सूरज का उजियारा।

"ओ..हो....हो..... आज एक दो नहीं, तीन-तीन रसीले छोटे बच्चे चाहिए मेरे पेट की आग को बुझाने के लिए।"

मगरमच्छ बढ़ता गया.... बढ़ता गया। आगे नारियल के पेड़ों का बड़ा झुरमुट था। मगर जानता था कि शहर के बच्चे वहाँ बिखरे नारियल खाने आते हैं। विशाल मगर ने तुरत-फुरत आसपास गिरी डंगालों, पत्तों और नारियलों को समेटा। उसके होंठ बुदबुदाए, "चाल नं. 1, मेरे खाने की पहली खेप अब दूर नहीं।"

उसने नारियल की डंगालों को मुँह में दबाया, नारियल को अपने अगले पैरों में इकट्ठा किया और पूँछ के बल खड़ा हो गया। दूर से देखने पर वह हूबहू नारियल का छोटा पेड़ सरीखा नज़र आ रहा था।

जल्दी ही दो बच्चे टोटो और मेरी नज़र आए। उनकी निगाहें नीचे गिरे नारियल ढूँढ रहीं थीं। लेकिन उन्हें तो पहले ही समेटा जा चुका था। अचानक उनकी नज़र उस छोटे से नारियल के पेड़ पर गई।

"मेरी, अगर तू मुझे थोड़ा सा उचका दे तो मैं इस पेड़ के नारियल तोड़ सकता हूँ।" टोटो बोला और दोनों दौड़ पड़े।

शाखों के बीच से धूर्त मगर पास आते बच्चों को निहार रहा था। उसने अपने होठों पर जीभ फेरी और इंतज़ार....।

अचानक कान-फाड़ू आवाज़ आई। जंगल के बीच से गेंडा सिर झुकाए बेतहाशा भागा चला आ रहा था। "टोटो, मेरी, भागो। यह पेड़ नहीं मगरमच्छ

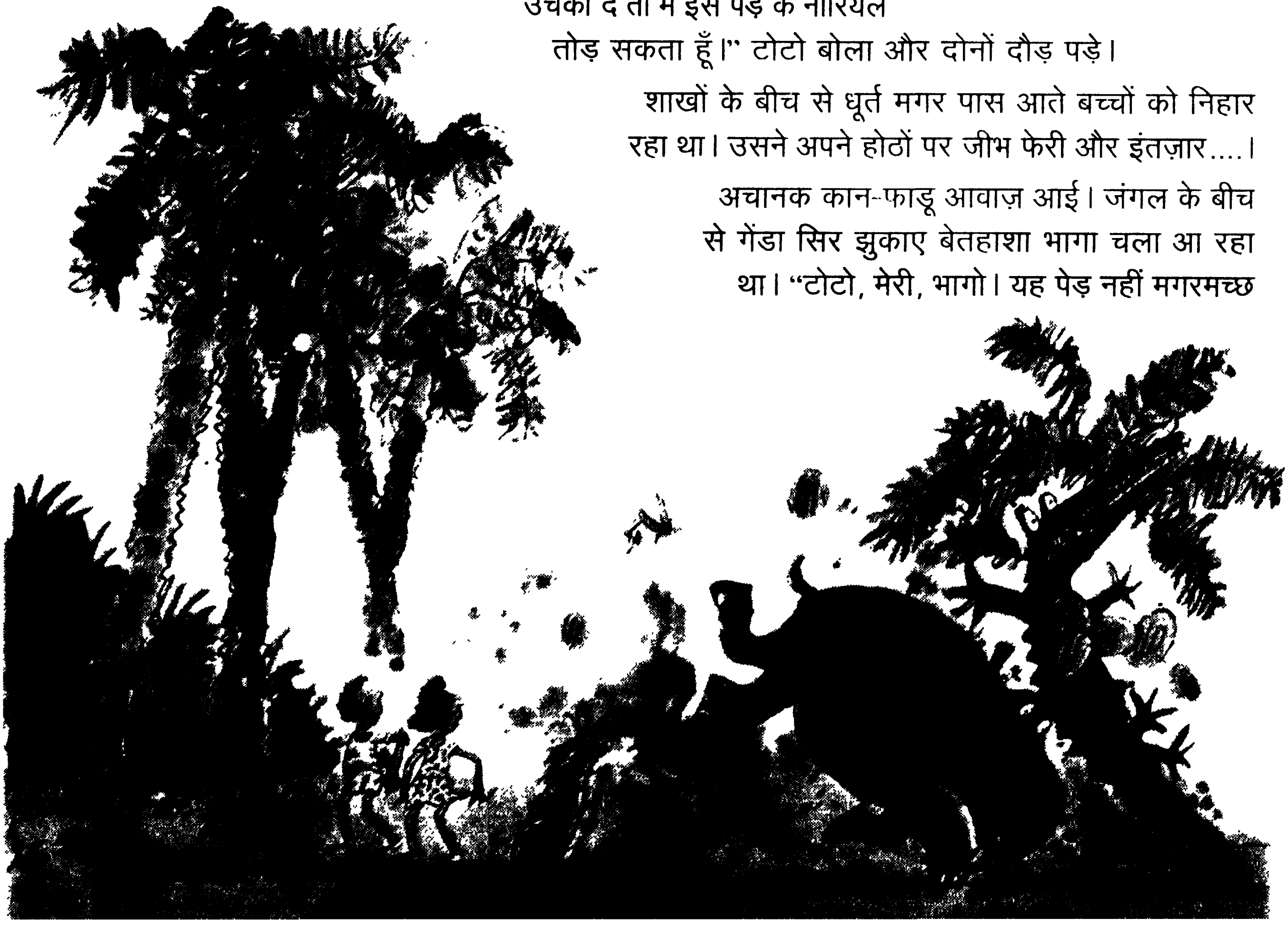

है जो तुम्हें खाने आया है," चिल्लाते-चिल्लाते गेंडे ने अपना सिर पेड़ पर दे मारा।

"उई..............!" चिल्लाते हुए लड़खड़ाता मगर नीचे आ गिरा। दोनों बच्चे भाग खड़े हुए।

लेकिन मगरमच्छ सख्त जान हुआ करते हैं। गेंडे भी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। विशाल मगरमच्छ ने हार न मानी। 'चाल नं. 2, यह तो अचूक रहेगी।' उसने मन ही मन सोचा।

स्कूल के मैदान में कोई नज़र नहीं आ रहा था। मगर ने लकड़ी का एक बड़ा लट्ठा देखा। वह उस पर ऐसे लेट गया मानो सी-सॉ हो। कुछ देर बाद खेल की घंटी हुई। बच्चे कूदते-फाँदते मैदान पहुँचे।

"अरे...! देखो नया सी-सॉ।" वे खुशी से चिल्लाए। "मेरी बारी, मेरी बारी" का शोर था।

एक कुछ बड़ी लड़की बोली, "यह कुछ अजीब सा सी-सॉ नहीं लग रहा क्या? क्या इस पर बैठना ठीक होगा।"

"हाँ हाँ क्यों नहीं.." फिर शोर हुआ।

मगर ने ज़रा-सी आँख खोल बच्चों के हुजूम को देखा और सोचा, 'जैसे ही इनमें से कोई मेरे सिर पर बैठेगा, मैं उसे चट कर जाऊँगा।'

लेकिन अचानक एक ज़ोर की हलचल हुई और जंगल से वही बंदर कूदता-फाँदता झूले पर आ बैठा। "बच्चो भागो! यह सी-सॉ नहीं विशाल मगर है," वह चिल्लाया। सारे बच्चे मिनटों में गायब हो गए।

मगर ने अब भी हार न मानी। भूख जोरों पर थी। 'अब कम से कम चार बच्चे तो चाहिए ही,' उसने सोचा।

शहर के कुछ बाहर एक शांत-सी जगह थी।

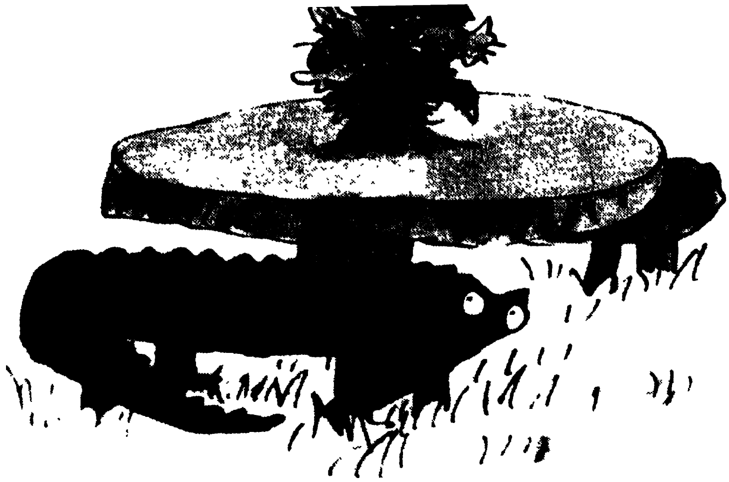

यह कहकर हाथी ने अपनी सूँड से मगरमच्छ की पूँछ पकड़ी और लगा घुमाने। तेज़....... तेज़....... और तेज़। जल्दी ही मगर हाथी के सिर के चारों ओर एक धुँधला सा घेरा बन गया।

घुमाते-घुमाते हाथी नें अचानक मगर को छोड़ दिया। मगर जाता रहा ऊँचे......., ऊँचे.........., और ऊँचे।

वह इतना ऊँचा था और इतनी तेज़ी से जा रहा था कि कुछ ही पलों में पृथ्वी एक छोटी-सी गेंद-सी नज़र आने लगी।

पिकनिक की जगह। वहाँ कई मेज़ कुर्सियाँ पड़ी थीं।

"चाल नं. 3, हम होंगे कामयाब...... एक दिन ..." मगर अगली चाल की तैयारी में जुट गया। उसने आसपास से फूल इकट्ठे किए। एक गुच्छा बनाया और एक मेज़ पर सजा दिया। मेज़ के एक ओर का बेंच हटाकर वहाँ कुछ इस तरह बैठ गया कि दूर से चार टाँगों वाला बेंच ही लग रहा था।

कुछ ही देर में पिकनिक मनाने बच्चे आते दिखाई दिए। बाकी मेज़ छोड़कर वे अभी फूलों के गुच्छे वाले मेज़ की ओर लपके ही थे कि हाथी के चिंघाड़ने की आवाज़ आई। "रुको...रुको.... रुक जाओ। यह बेंच नहीं धूर्त मगरमच्छ है।"

वह जाता गया, जाता गया। पहले चाँद आया। उसे पार किया। फिर तारे....... और फिर ग्रह आए। मगर ने उन्हें पार किया और और आगे जाता गया। अंततः एक ज़ोर का धमाका हुआ - **भड़ाम्!** और मगर सूरज की गरमा-गरम लपटों में विलीन हो गया। भूने कबाब की तरह....!

सभी चित्र - क्वेंटिन ब्लेक

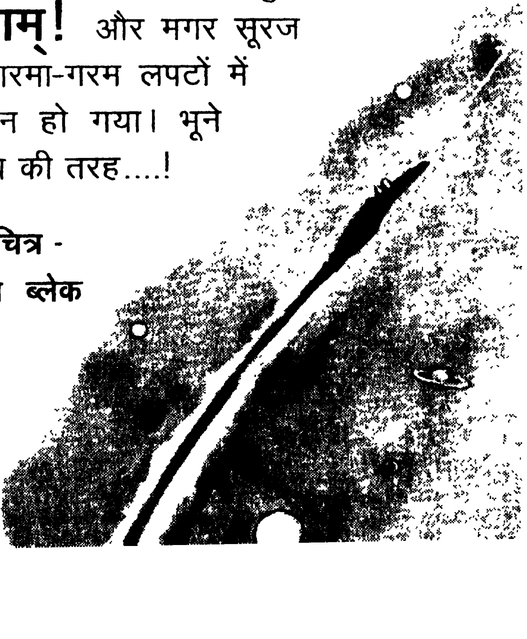

जादुई डिब्बा

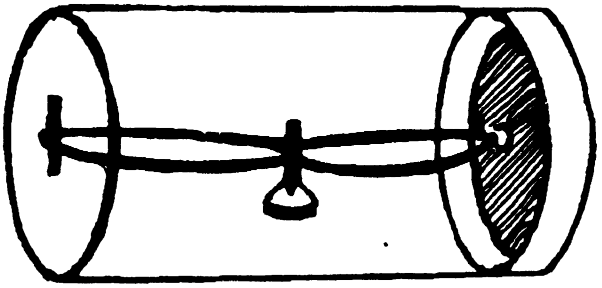

ज़रूरी सामान

एक बेलनाकार डिब्बा
मोटे रबर का छल्ला
दो छोटी कील या तीली
कोई छोटी वज़नदार वस्तु (जैसे नट बोल्ट)।

कुछ तैयारी ....

डिब्बे के ढक्कन के बीचोंबीच एक छेद करो। इस छेद की सीध में डिब्बे की तली में भी एक छेद करो। अब डिब्बे की तली में रबर के छल्ले का एक सिरा पिरोकर कील या तीली फँसा दो ताकि छल्ला छेद से निकल न पाए। छल्ले के बीच में किसी वज़नदार वस्तु को धागे से इस तरह बाँधो कि वह लटकती रहे पर डिब्बे की दीवार को न छुए। छल्ले के दूसरे सिरे को ढक्कन के छेद में पिरोकर ढक्कन को डिब्बे पर लगा दो। छल्ले के इस सिरे में भी एक तीली या कील फँसा दो। तुम्हारा जादुई डिब्बा तैयार है।

क्या करना है ....

इस डिब्बे को तेज़ धक्का मारकर ज़मीन पर लुढ़काओ। डिब्बा कुछ दूर तक लुढ़ककर रुक जाता है। पर यह क्या, यह तो कुछ दूर जाकर वापस तुम्हारी तरफ लौट रहा है।

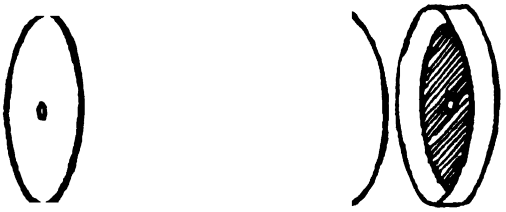

भला क्यों?

जब डिब्बा लुढ़कता है तो उसमें बंधे छल्ले में बल पड़ने लगते हैं, परंतु वज़न नहीं घूमता है। जब छल्ला बल खाकर एकदम तन जाता है तब डिब्बे का लुढ़कना रुक जाता है। बस कुछ ही क्षणों बाद छल्ले में बल खुलने लगते हैं। बल खुलने पर वे डिब्बे को विपरीत दिशा में धक्का देते हैं और इसीलिए डिब्बा वापस लुढ़कता है। और जब छल्ले में पड़े बल खुल जाते हैं तो डिब्बे का लुढ़कना भी रुक जाता है।

जानते हो इस पूरी प्रक्रिया में कौन-सा वैज्ञानिक सिद्धांत लागू होता है? वही जो घड़ी के स्प्रिंग पर लागू होता है। जब हम घड़ी में चाबी भरते हैं तो वास्तव में उसके स्प्रिंग को कसते हैं। कसने पर स्प्रिंग तन जाता है। तना हुआ स्प्रिंग जब धीरे-धीरे खुलने लगता है तो वह घड़ी की सुई को भी घुमाता चलता है। तुम्हारे इस जादुई डिब्बे के छल्ले के साथ भी यही प्रक्रिया होती है।

याद करो यह प्रक्रिया तब भी होती है जब तुम झूला झूलत-झूलते उसे गोल-गोल घुमाकर छोड़ देते हो। याद आया?

सभी चित्र : विवेक वर्मा

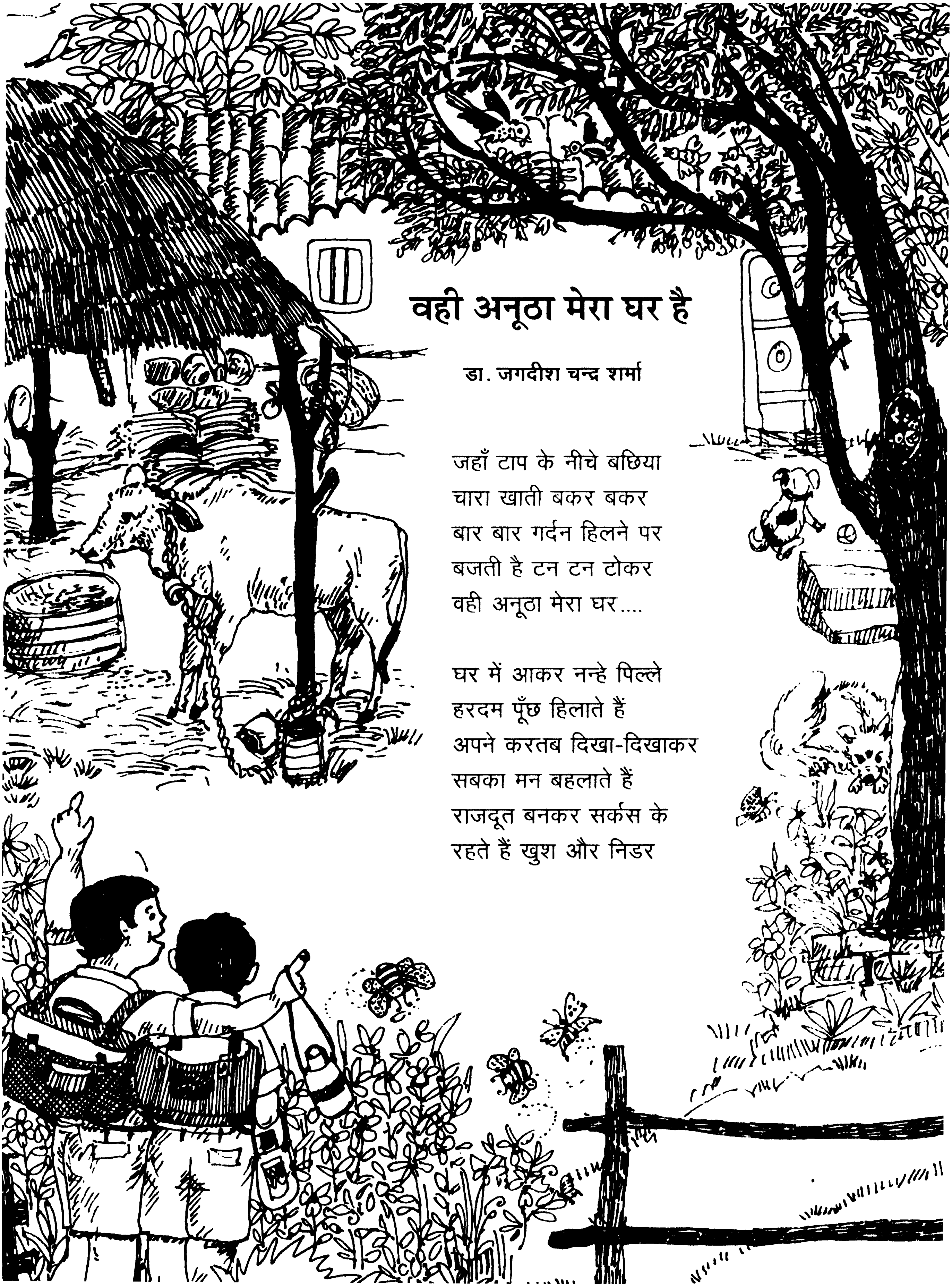

वही अनूठा मेरा घर है

डा. जगदीश चन्द्र शर्मा

जहाँ टाप के नीचे बछिया
चारा खाती बकर बकर
बार बार गर्दन हिलने पर
बजती है टन टन टोकर
वही अनूठा मेरा घर....

घर में आकर नन्हे पिल्ले
हरदम पूँछ हिलाते हैं
अपने करतब दिखा-दिखाकर
सबका मन बहलाते हैं
राजदूत बनकर सर्कस के
रहते हैं खुश और निडर

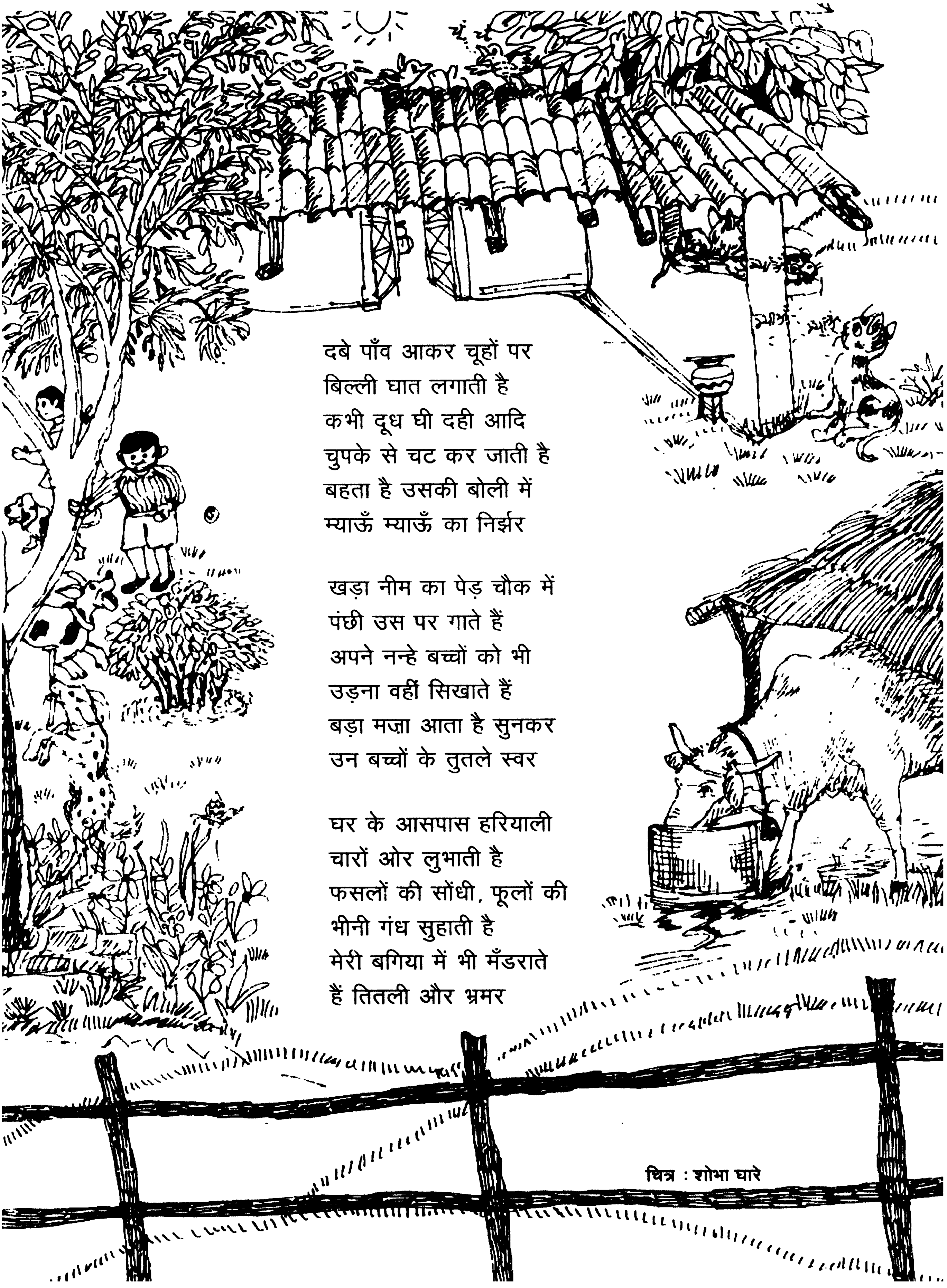

दबे पाँव आकर चूहों पर
बिल्ली घात लगाती है
कभी दूध घी दही आदि
चुपके से चट कर जाती है
बहता है उसकी बोली में
म्याऊँ म्याऊँ का निर्झर

खड़ा नीम का पेड़ चौक में
पंछी उस पर गाते हैं
अपने नन्हे बच्चों को भी
उड़ना वहीं सिखाते हैं
बड़ा मज़ा आता है सुनकर
उन बच्चों के तुतले स्वर

घर के आसपास हरियाली
चारों ओर लुभाती है
फसलों की सोंधी, फूलों की
भीनी गंध सुहाती है
मेरी बगिया में भी मँडराते
हैं तितली और भ्रमर

चित्र : शोभा घारे

सवालीराम

ये हैं सवालीराम। मज़ाक नहीं, इनका नाम वाकई सवालीराम ही है! और इनका काम है लोगों के तरह-तरह के सवालों के जवाब ढूँढ-ढूँढकर बताना। बच्चों के सवालों का जवाब ढूँढने में इन्हें और भी मज़ा आता है। तो अब तुम सब इनसे अपने मन में कुलबुलाने वाले सवाल पूछना शुरू कर दो।

प्रिय सवालीराम,

नमस्कार।

मुझे आपकी कोलम बहुत पसन्द है। मेरा सवाल है कि –

काले बादल कोहरा (घुम्मस) बनकर जमीन पर क्यों नहीं आते?

मेधा कपिल शाह, विनोबा आश्रम, गोत्री, बड़ोदा, गुजरात

प्रिय मेधा,

तुम्हारी चिट्ठी मिली और सवाल पढ़कर खूब अच्छा लगा। चलो इसी बहाने चकमक के सभी पाठकों के साथ बादलों के बारे में कुछ बातें करते हैं।

असल में बादल हैं क्या चीज़? तुम कहोगे, कि ये गर्मी के कारण समुन्दर, नदी, तालाब, आदि से भाप बनकर उड़ने वाला पानी है। बात तो सही है। बादल दरअसल पृथ्वी के जल चक्र की एक ऐसी अवस्था है जिसमें पानी धरती और आकाश के बीच सफर कर रहा होता है। समुन्दर, नदी, तालाब, आदि का पानी सूरज की गर्मी के कारण भाप बनकर उड़ जाता है। और यह वापस बारिश, ओले, ओस, आदि के रूप में धरती पर वापस लौटता है। पानी की इन दो यात्राओं के बीच की स्थिति है बादल।

चलो देखते हैं कि बादल बनते कैसे हैं। बादल असल में भाप से ठण्डा होकर बनी पानी की बहुत ही छोटी-छोटी बूँदों का जमावड़ा होते हैं। पर पानी की ये बूँदें इतनी छोटी होती हैं कि बारिश बनकर बरस भी नहीं सकतीं। वे हवा के साथ-साथ उड़ती रहती हैं।

हमारे वातावरण में मौजूद भाप तभी पानी में बदलता है जब वह ठण्डा होने लगे। आम तौर पर वातावरण के तापमान और पानी का भाप अवस्था में रहने के बीच एक सीधा सम्बंध होता है। अगर तापमान ज़्यादा हो तो हवा में मौजूद भाप के कण बहुत सक्रिय होते हैं, तेज़ी से इधर-उधर भागते रहते हैं। और ऐसी स्थिति में वे बिना एक-दूसरे से या किसी और ठोस चीज़ से चिपके, कम जगह में खूब सारे समा जाते हैं।

पर जब इसी हवा को ठण्डा किया जाए तो भाप के कणों की गति धीमी पड़ने लगती है और वे एक दूसरे से या धूल या अन्य ठोस चीज़ों से टकराते हुए उससे चिपकने लगते हैं। इसी तरह भाप वापस पानी की बूँदों में बदलने लगता है। ये बूँदें कभी इतनी छोटी होती हैं कि बादल के रूप में तैरती रहती हैं तो कभी रात को ओस के रूप में पौधों और घास और मकड़ी को जालों पर चिपक जाती हैं।

तुम शायद सोच रहे होगे कि धरती से बहुत ऊपर, दूर हवा में ऐसी कौन सी ठोस चीज़ होगी जिस

पर भाप चिपककर बादल बनाएँ। पर ऐसी बहुत सी बारीक, कोरी आँखों से न दिखने वाली चीज़ें हैं जो हवा में तैरती रहती हैं।जैसे धूल, समुन्दर के नमकीन पानी के भाप बनते समय उड़ गए नमक के कण, जंगलों या तेल की कुओं में लगी आग से उड़ने वाले धुएँ में छिपे कालिख के कण आदि। इन में से किन कणों पर भाप ठण्डा होकर चिपकेगा, यह इस पर निर्भर करता है कि उस कण का आकार कितना बड़ा है और पानी के कण उससे चिपकना पसन्द करते हैं कि नहीं।

अब कोहरे की बात। कोहरा भी ठीक उसी तरह बनता है जिस तरह बादल बनते हैं। तुमने देखा होगा कि मैदानी इलाकों में जाड़ों में अगर कभी बारिश हो जाए तो अगले दिन सुबह खूब कोहरा छाया रहता है। यानी कोहरा तभी होता है जब वातावरण में नमी हो। यानी जब हवा में किसी न किसी रूप में पानी के बारीक कण मौजूद हों।

अक्सर जाड़ों में भी दिन भर तो धरती सूरज की गर्मी से तप ही जाती है। पर रात को यह जल्दी ही ठण्डी भी हो जाती है। ऐसे में जब गुनगुनी-सी गर्म हवा ठण्डी धरती के ऊपर से बहती है, तो यह नम हवा भी ठण्डी हो जाती है। कभी-कभी वह इतनी ठण्डी हो जाती है कि उसमें मौजूद भाप के कण एक दूसरे से या धूल के कणों से चिपकने लगते हैं। इस तरह जो बूँदें बनती हैं वे बहुत ही बारीक होती हैं। उन्हें तो बस कोहरे में चलते हुए चेहरे पर महसूस ही किया जा सकता है! पर इन्हीं में से कुछ बूँदें एक-दूसरे से मिलकर कुछ बड़ी हो जाती हैं। और ये हमारे बालों से या कपड़ों पर चिपकने लगती हैं।

तो अब तुमने यह देख लिया कि दरअसल बादल में और कोहरे में कोई खास अन्तर नहीं है। सिर्फ इतना ही कि कोहरा धरती के करीब होता है और बादल बहुत दूर बनते हैं।

अब रही बात बादलों के ज़मीन पर आने की। भई, बादलों को आकाश में तैरते तो तुमने भी देखा होगा। ये उसी दिशा में बहते हैं जहाँ हवा बह रही होती है। कई बार हवा बादलों को बहाकर कुछ ऊपर या नीचे भी ले जाती हैं। पर ये तब भी हमसे इतनी ऊँचाई पर रहते हैं कि हमें पता नहीं चलता।

हाँ, कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इसी तरह से बहते हुए बादलों के रास्ते में कोई पहाड़ वगैरह आ जाए। तब वहाँ रहने वाले लोगों को ऐसा महसूस होता है जैसे बादल ज़मीन पर उतर आए हों!!

अगस्त 2003 अंक के माथापच्ची के हल

1.
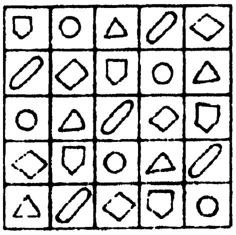

4.
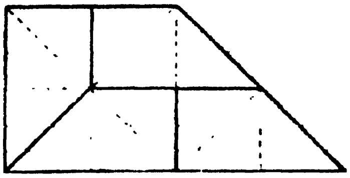

5.
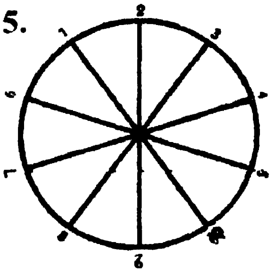

वर्ग पहेली अगस्त अंक के हल

न	दी	प	हा	ड़		बु	आ	ई
ग		त			डा		री	
र	वि	वा	र		क	वि		
स		र		बा	घ		मे	
भा	ला		क		र		घ	र
	ख		स	खि		पा		ज
		चा	र		अ	ल	ग	नी
	साँ		त			नौ		गं
ग	प	नी		धो	बी	का	ग	धा

इसमें क्या शक है!

पक्षी पालने वाले एक बहेलिए को तोते का एक बहुत ही सुन्दर बच्चा मिला। सब लोग अपने तोते को 'राम राम' बोलना सिखाते हैं। बहेलिए ने भी बहुत कोशिश की। लेकिन तोता बहुत दिनों तक कुछ भी बोलना नहीं सीख पाया।

फिर अचानक एक दिन वह एक बात बोलना सीख गया। जब भी तोते से कोई बात करता, तोता कहता, 'इसमें क्या शक है?'

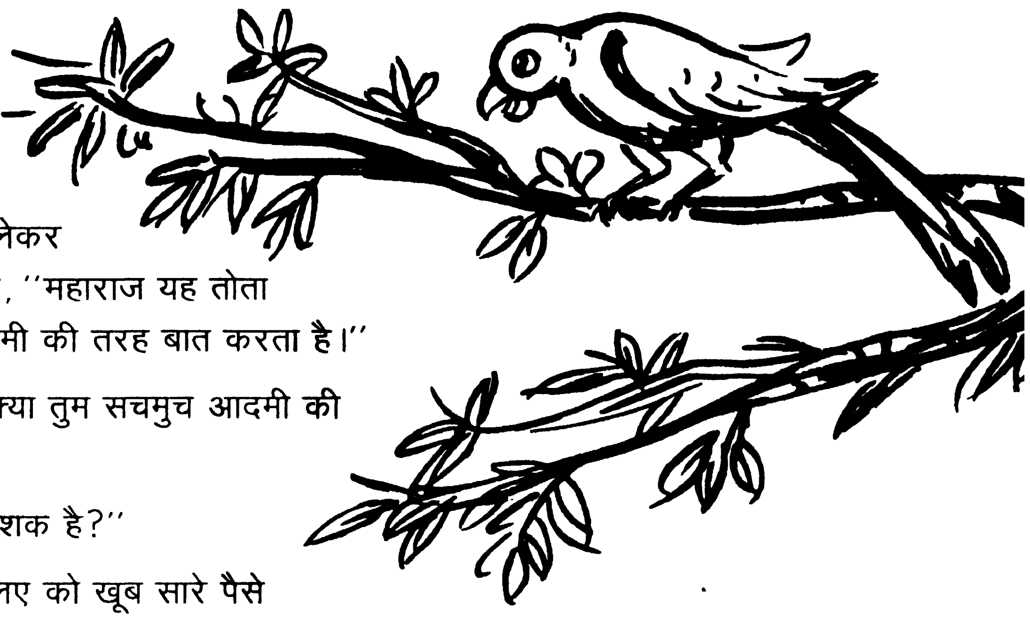

बहेलिया अपने तोते को लेकर राजा के पास गया। बोला, ''महाराज यह तोता अनोखा है। बिल्कुल आदमी की तरह बात करता है।''

राजा ने तोते से पूछा, ''क्या तुम सचमुच आदमी की तरह बात करते हो?''

तोता बोला, ''इसमें क्या शक है?''

राजा खुश हो गया। बहेलिए को खूब सारे पैसे देकर राजा ने तोता खरीद लिया। बाद में राजा ने देखा कि तोता तो हर बात के जवाब में यही कहता है कि इसमें क्या शक है। राजा को गुस्सा आया। वह तोते से बोला, ''तुम क्या बस यही एक बात बोलना जानते हो, इसमें क्या शक है? इसमें क्या शक है?''

तोता बोला, ''इसमें क्या शक है?''

राजा खीझकर बोला, ''अरे मैं क्या बेवकूफ हूँ, जो इतने सारे पैसे देकर तुझे खरीदा?''

तोता बोला, **''इसमें क्या शक है!''**

यह कहानी एकलव्य द्वारा विकसित प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की कार्य -पुस्तिका खुशी-खुशी से ली गई है।

सभी चित्र ● कैलाश दुबे

चित्र-पहेली

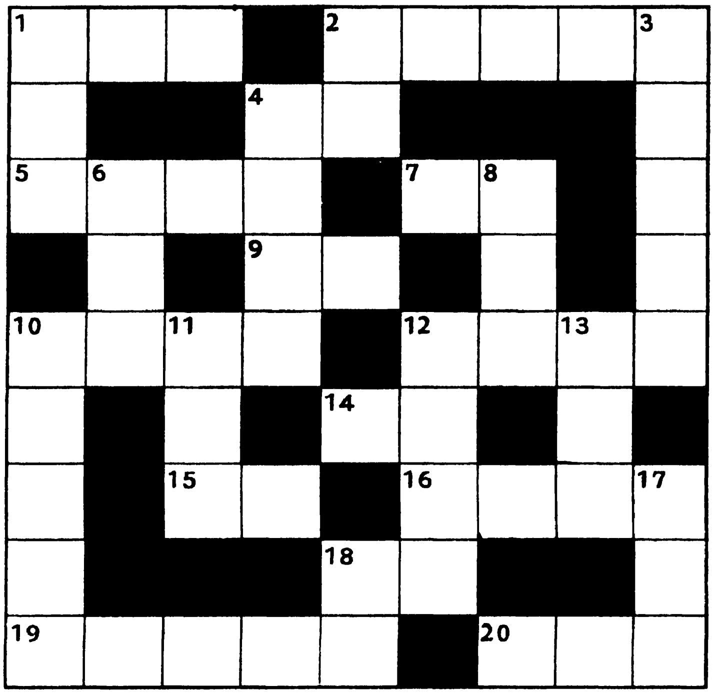

5.

7.

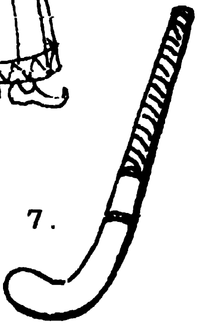

9.

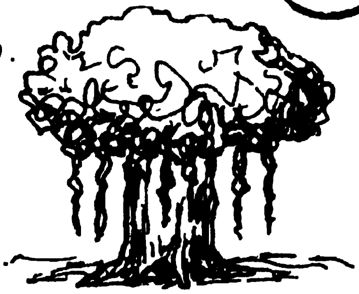

संकेत: बाएँ से दाएँ

1.

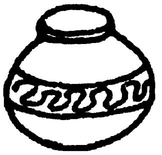

2.

10.

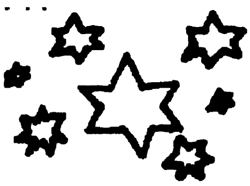

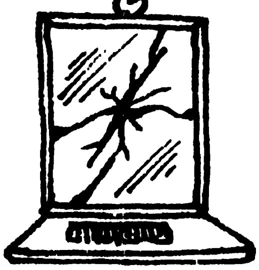

16.

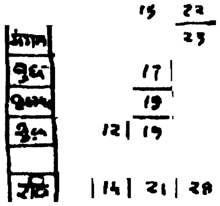

4.

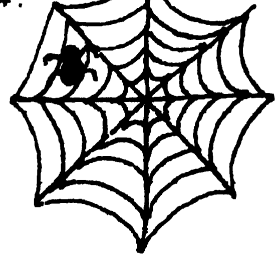

15.

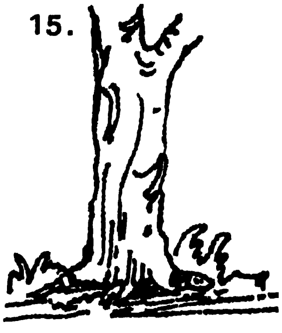

18.

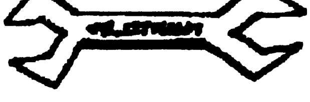

19.

20.

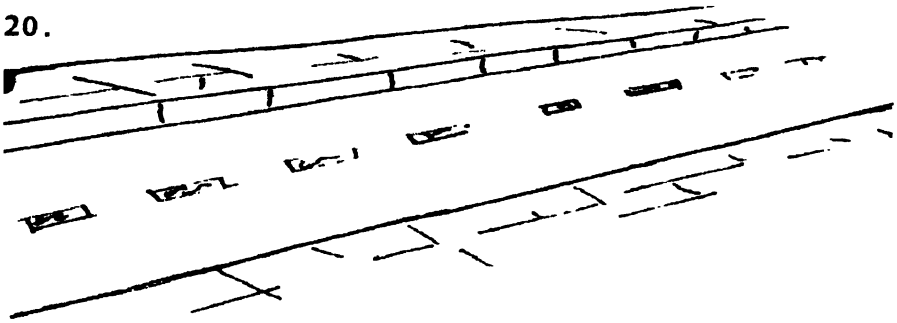

संकेत: ऊपर से नीचे

1.

2.

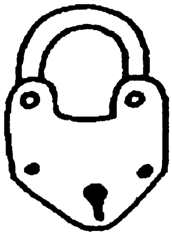

3.

4.

8.

6.

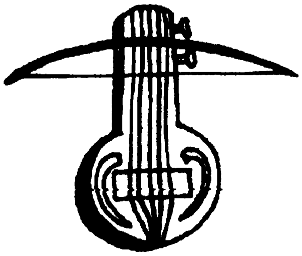

10.

11.

12.

13.

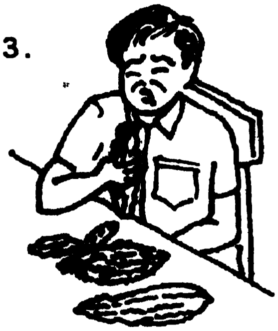

17.

18.

चकमक समाचार

कला सम्मान समारोह आयोजित

पिछले माह मध्यप्रदेश के उज्जैन ज़िले में कला सम्मान समारोह हुआ। इसे एकलव्य और वाकणकर शोध संस्थान ने मिलकर आयोजित किया। श्री विष्णु चिंचालकर (जिन्हें शायद चकमक के कुछ पाठक गुरूजी के नाम से जानते होंगे) की तीसरी पुण्यतिथि के अवसर पर हुए इस कार्यक्रम में बच्चों के साथ कुछ गतिविधियाँ भी हुईं। बेकार या कबाड़ की चीज़ों को दिलकश शक्लें देने के साथ चित्रकला की गतिविधि भी इस अवसर पर हुई। बच्चों ने आम की गुठली, लकड़ी के ठूँठ, पानी की खाली बॉटल, आइसक्रीम के कोन, फटे पुराने कपड़ों को जानदार चीज़ों में बदला। इस कार्यक्रम का उद्देश्य गुरूजी के काम को आगे बढ़ाकर नई प्रतिभाओं को मौके देना था। कार्यक्रम के आखिरी दिन शिक्षक, बच्चों और कलाकारों का जमावड़ा हुआ। इस कार्यक्रम में गुरूजी के संस्मरण सुनाए गए। बच्चों को उनकी रचनात्मकता के लिए किताबें और प्रमाणपत्र भी दिए गए। यहाँ इसी अवसर पर बनाई गई कुछ बढ़िया रचनाएँ तुम देखोगे।

● रपट - प्रेम मनमौजी

हरणगाँव में बाल मेला

हरणगाँव में गतिविधि करते हुए बच्चे

खेल समाचार

क्रिकेट

क्रिकेट में इन दिनों हमारी टीम न्यूज़ीलैण्ड के दौरे की तैयारी कर रही है। न्यूज़ीलैण्ड के पिछले दौरे की धुलाई तो तुम्हें भी याद होगी। देखते हैं क्या होता है इस बार!

उधर बांग्लादेशी टीम हमारे पड़ोसी पाकिस्तान की टीम से भिड़ रही है। पहले टेस्ट में बांग्लादेश ने उम्दा प्रदर्शन किया, पर रावलपिण्डी एक्सप्रेस उर्फ शोएब अख्तर ने कुछ ही ओवरों में पाँसा पलट दिया।

टेनिस

टेनिस के शानदार खिलाड़ी सम्प्रास ने टेनिस से सन्यास ले लिया है। वे टेनिस की दुनिया में तेरह साल छाए रहे। वे तेज़ सर्व और वॉली के लिए जाने जाते रहे हैं। सम्प्रास ने थोड़े-बहुत नहीं, चौदह ग्रैण्ड स्लैम जीते। दो जाँबाज़ों जॉन मेकनरो और बोरिस बेकर ने भी उनके विदाई समारोह मे भाग लिया। अलविदा सम्प्रास!

हमारे टेनिस सितारे लिएण्डर पेस इन दिनों अस्वस्थ हैं। पहले खबर थी कि उन्हें कैंसर है, पर बाद की जाँचों में यह गलत साबित हुआ। यानी वे कुछ ही दिनों में फिर कोर्ट में दिखाई देंगे। टेनिस प्रेमियों ने शुक्र मनाया।

विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप

पेरिस में इन दिनों विश्व एथलेटिक्स चैम्पियनशिप चल रही है। अंजू जॉर्ज के इकलौते कांस्य पदक के कारण हमारा नाम भी पदकों की सूची में आ गया है। अंजू जॉर्ज ने यह पदक 6.70 मीटर लम्बी कूद में जीता। इस प्रतियोगिता में किम कोलिन्स ने सौ मीटर का स्वर्ण पदक जीता। यह दूरी उन्होंने 10.07 सैकण्ड में पूरी की। तुम्हें तो मालूम ही होगा कि सौ मीटर का पिछला रिकॉर्ड लुइस के नाम है। लुइस ने यह दूरी 9.89 सेकेण्ड में पूरी की थी। महिलाओं की प्रतियोगिता की यही दौड़ केली व्हाइट ने जीती। उन्होंने यह दूरी 10.85 सेकेण्ड में पूरी की।

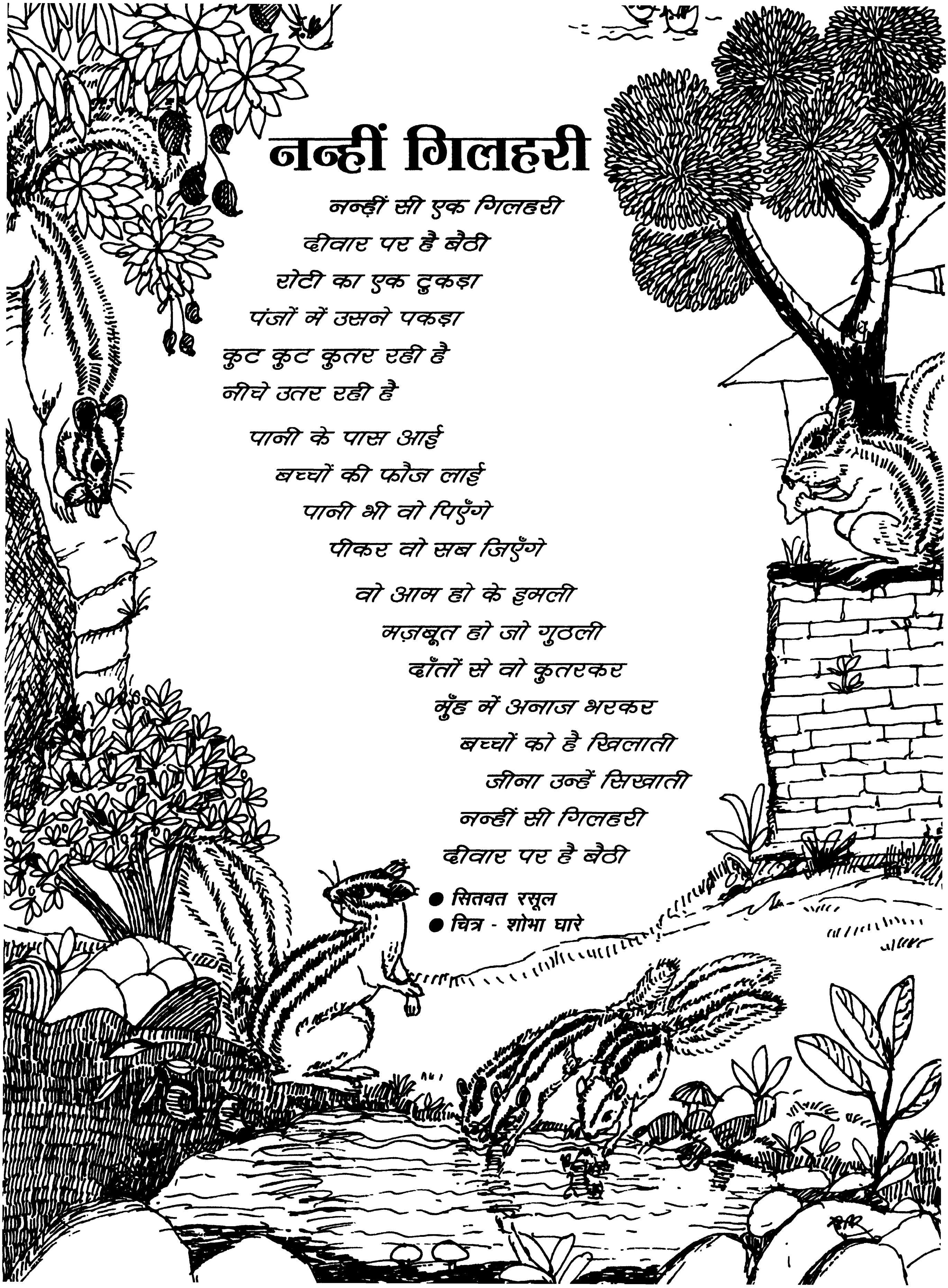

नन्हीं गिलहरी

नन्हीं सी एक गिलहरी
दीवार पर है बैठी
रोटी का एक टुकड़ा
पंजों में उसने पकड़ा
कुट कुट कुतर रही है
नीचे उतर रही है

पानी के पास आई
बच्चों की फौज लाई
पानी भी वो पिएँगे
पीकर वो सब जिएँगे

वो आम हो के इमली
मज़बूत हो जो गुठली
दाँतों से वो कुतरकर
मुँह में अनाज भरकर
बच्चों को है खिलाती
जीना उन्हें सिखाती
नन्हीं सी गिलहरी
दीवार पर है बैठी

● सितवत रसूल
● चित्र - शोभा घारे

माथापच्ची

(1)

जोकर भाई के पास कुल कितने पतंग हैं?

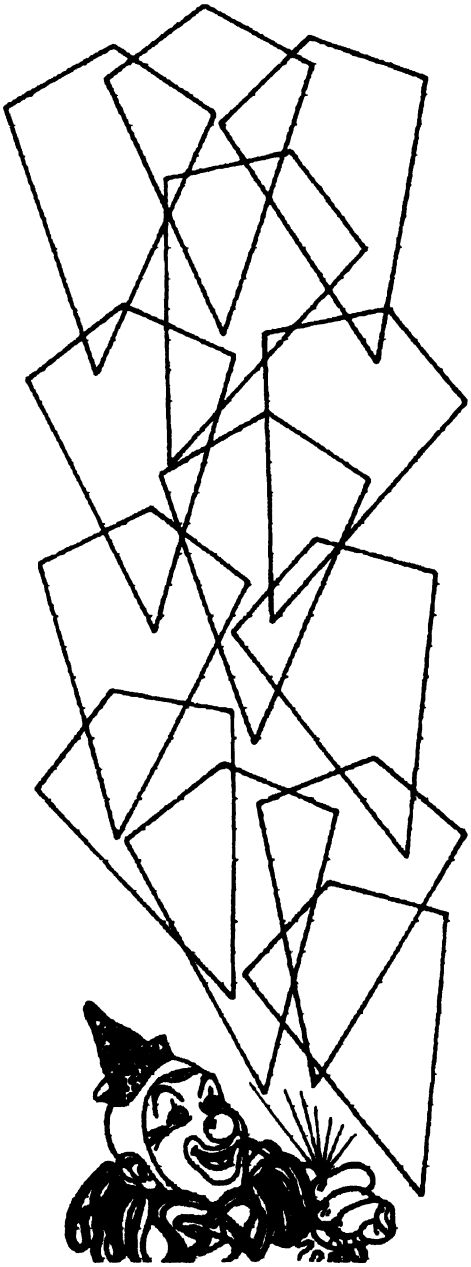

(2)

गगन, ककड़ी, शशक, ललक.....ऐसे कितने ही शब्द होंगे! क्या खासियत है इनकी? एक तो ये सभी तीन अक्षरों से बने हैं। दूसरे, इनके पहले दो अक्षर समान हैं। क्या तुम इसी तरह के पाँच और शब्द सिर्फ पाँच मिनिट में ढूँढ सकते हो?

(3)

इन गुब्बारों के झुण्ड को गौर से देखो! पहले तो ये बताओ कि ये कितने हैं। फिर इनकी शक्लें मिलाना। कितने गुब्बारों की शक्ल का एक और गुब्बारा है?

(4)

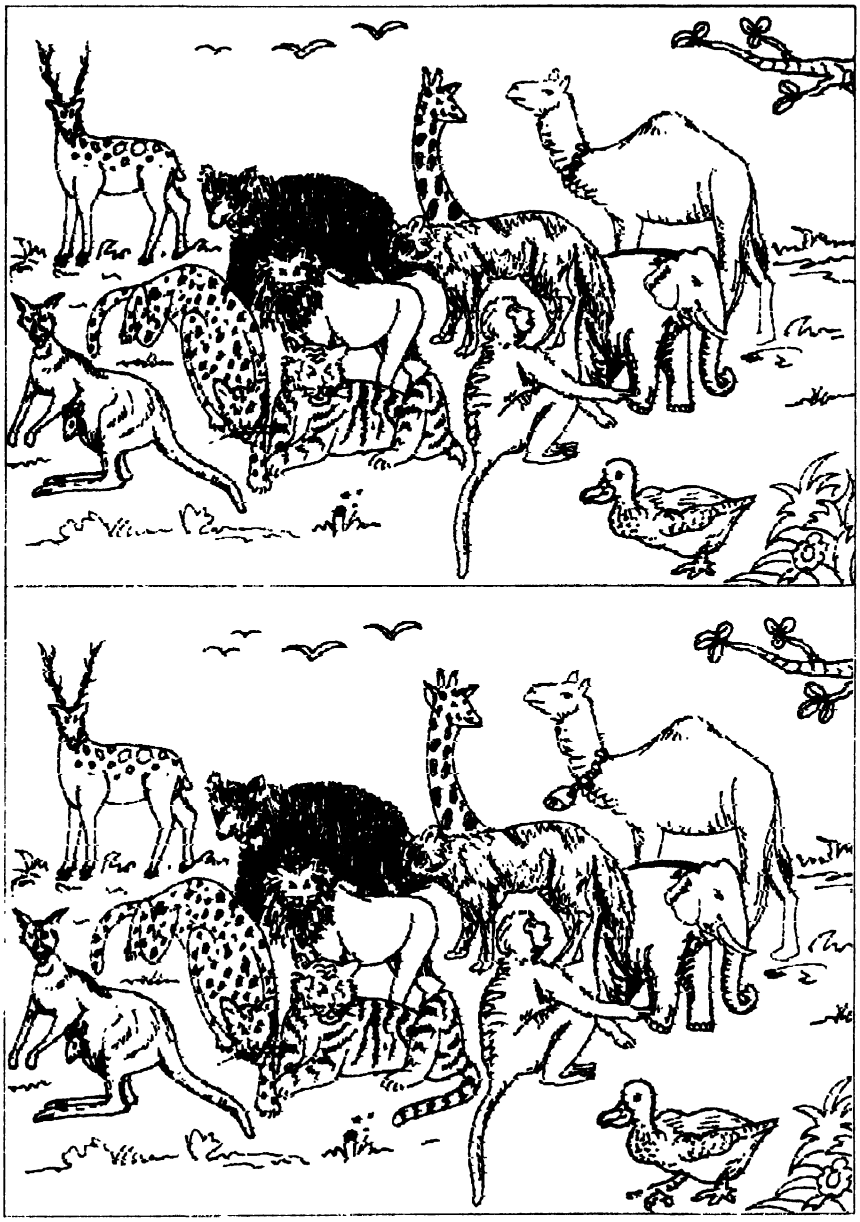

खरगोश के बच्चे का जन्मदिन मनाने जा रहे हैं ये सब लोग! भई तुम भी चले जाना। पर ज़रा ये माथापच्ची तो हल करते जाओ कि इन दो तस्वीरों में कुल कितने फर्क हैं ?

(5)

इन बक्सों को ज़रा ध्यान से देखो। हर खाने का दूसरे खाने से एक रिश्ता है। बस तुम्हें इसी रिश्ते का पता करना है। फिर खाली दो खानों में अंक भरना कोई बड़ा काम नहीं होगा

7

28 48

4

66 79

8	2
?	?

(6)

दो लड़के और तीन लड़कियाँ, कुल पाँच लोग हैं। राशिद ने देखा थैली में बस पाँच केले हैं। अब राशिद इन पाँचों को एक एक केला दे देता है। हैरत की बात यह है कि थैली में फिर भी एक केला रहता है। केले छह तो थे नहीं, फिर थैली में एक केला कैसे बचा?

● उदय खरे

जब मैं छोटा था, तब सोचा करता था कि क्रिकेट में मैं बैटिंग ही करता रहूँ तो कितना अच्छा हो! जिस पर दाम हो वह गेंद फेंके और गेंद दूर जाने पर उठाकर भी वही लाए।

अरे मैं यह सब यूँ ही नहीं सोच रहा हूँ। हुआ यह कि मैं एक दिन पैसेन्जर ट्रेन से होशंगाबाद जा रहा था। हमारी ट्रेन किसी वजह से मण्डीदीप में दो घण्टे खड़ी रही। सब लोगों की तरह मैं भी स्टेशन पर टहलने लगा। चार पाँच बच्चे पास में ही खेल रहे थे। बेशरम की डण्डी को वो बैट की तरह इस्तेमाल कर रहे थे। मुझे लगा कि वे क्रिकेट खेल रहे हैं। पर स्टम्प तो थे ही नहीं! और सब बच्चों के पास बेशरम के वैसे ही बैट थे।

मैं ध्यान से देखने लगा। हर बच्चा एक पत्थर पर अपना बैट रखकर खड़ा था। गेंद फेंकने वाला बच्चा बैट के नीचे रखे पत्थर पर अपना निशान लगाता था। पत्थर में गेंद न लगे इसके लिए बैट लेकर खड़ा बच्चा तैयार रहता था। गेंद जब पत्थर की तरफ बढ़ती, तो वह उसे बैट से मारता। इस तरह गेंद जिस दूसरे खिलाड़ी के आसपास पहुँचती, वह भी इसे और दूर पहुँचा देता है।

ऐसा तब तक चलता रहता है जब तक गेंद फेंकने वाला गेंद के पास नहीं पहुँच जाता। दाम देने वाले को गेंद अब वहीं से फेंकनी पड़ती। हो सकता है जब तुम इस खेल को खेलो तो और भी नए-नए नियम निकलें। इन नए नियमों के बारे में मुझे भी लिखना!

और हाँ! इस खेल को तुम क्या नाम दोगे?

● प्रमोद मैथिल

चिडिया की चोंच

गोपीचन्द श्रीनागर

जो काम इंसान के लिए उनके हाथ करते हैं, वही काम चिड़ियों के लिए उनकी चोंचें करती हैं। तिनके चुनना, दाना चुगना, चुग्गा उठाना, पानी पीना, नन्हें शिकार को दबोचना, खुजली करना, अपने पर सँवारना, आदि सारे काम पक्षी अपनी चोंचों से करते हैं।

चिड़िया की चोंच हड्डी से बना उसके सिर से निकला लम्बा जबड़ा होता है। चोंच ही चिड़िया की हुकनुमा नाक भी है, जिसके पिछले सिरे पर उसके नथुने होते हैं। चिड़ियों के दाँत नहीं होते हैं। खाने के लिए चोंच से उठाना या झपटना और पकड़ना, और फिर निगल जाना।

शायद तुमने गौर किया हो कि मोर, कबूतर की चोंचें भी छोटी होती हैं। बगुला-सारस अपनी लम्बी चोंच से पानी के अन्दर की मछलियों को लपक लेते हैं। कठफोड़वा अपनी नुकीली पैनी चोंच से पेड़ के तने में घर कर लेता है। तोते अपनी नुकीली, डिबिया-सी चोंच के हुकनुमा भाग से फलों को खरोंचकर खाते हैं।

शिकारी पक्षी अपना शिकार पंजों से पकड़ते हैं पर कुतरकर, नोचकर, गड़प कर जाने में यही चोंच मदद करती है। तुमने तिनका बीन-बीनकर लाती गौरैया को तो देखा ही होगा। यह काम वह अपनी नन्हीं चोंच से ही करती है। और कितना पेचीदा घोंसला बुनती है... इसी चोंच से!

पक्षी प्यार भी चोंच लड़ाकर करते हैं। नर पक्षी की सुन्दर मज़बूत चोंच पर मादा आकर्षित होती है। चोंच और पंख चिड़ियों के गहने हैं। तोते की सुर्ख लाल चोंच सुन्दरता की प्रतीक मानी जाती है। फिर चोंच ही पक्षियों के शस्त्र होते हैं जिनसे वे अपना बचाव करते हैं।

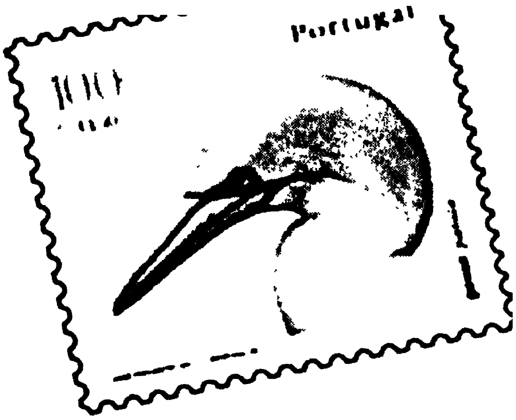

तो चिड़ियों के इन्हीं रंग-बिरंगे चोंचों पर कई देशों ने कई डाक टिकिटें निकाली हैं। इस बार इन्हीं डाक टिकिटों की मदद से हम पक्षियों के चोंच भी देखते चलते हैं।

छुरी-सी पतली नुकीली छोटी चोंच वाली एक सैलानी चिड़िया पर इंग्लैण्ड के रॉयल मेल ने एक विशेष डाक टिकिट 63 पेंस 6 अप्रैल 1999 में अपने सहस्त्राब्दी संग्रह के अंतर्गत निकाला था। इंगलैण्ड में ही एक छोटी चोंच वाले खलिहानी उल्लू पर 18 जनवरी 2000 को एक विशेष डाक टिकिट निकाला गया था। यह विशेष डाक टिकिट मैनचेस्टर में चल रही तृतीय सहस्त्राब्दी संरक्षण योजना को समर्पित किया गया। इसी के साथ, वहाँ निकले एक विशेष टिकिट पर हम मझौली चोंच वाले स्कॉटलैण्ड के सी बर्ड के झुण्ड को देख सकते हैं। (इनके चित्र अगले पेज पर देखो।)

ब्रितानी उल्लू जो 39 सेण्टीमीटर लम्बे और 460 ग्राम भारी होते हैं। इनका चेहरा पीपल के पत्ते जैसा और आँखें काली तथा चोंच छोटी होती हैं। ये चूहों, छछूंदर, चिड़ियों को खाते हैं। चोंच से ये दाँतों का काम लेते हैं। रॉयल मेल ने 14 जनवरी 2003 में शिकारी खलिहानी उल्लू और शिकारी बाज पर विशेष डाक टिकिट निकाले थे। इन टिकिटों पर तुम इन पक्षियों की डंक जैसी छोटी चोंच देख सकते हो।

सुन्दर रंगीन चोंच वाली पुर्तगाली चिड़ियों पर पुर्तगाल में 12 मार्च 2000 को पाँच बहुरंगी विशेष डाक टिकिट प्रदर्शित किए गए।

20 सितम्बर 2001 को आधुनिक वन्य जीवन शृंखला के अंतर्गत जांघिल पर डाक टिकिट निकला। जांघिल की चोंच लम्बी होती है। 400 पैसे के इस डाक टिकिट पर इस पक्षी की चोंच अंकित है।

7 मार्च 1991 में निकले चार विशेष डाक टिकिटों (21, 35 व 50 सेण्ट) पर वहाँ की रंग बिरंगी नन्हीं-नन्हीं चिड़ियों की प्यारी-प्यारी छोटी-छोटी चोंचों का नज़ारा देखिए। ये चोंचें इनकी खानपान से जुड़ी ज़रूरतों के हिसाब से प्रकृति की देन हैं।

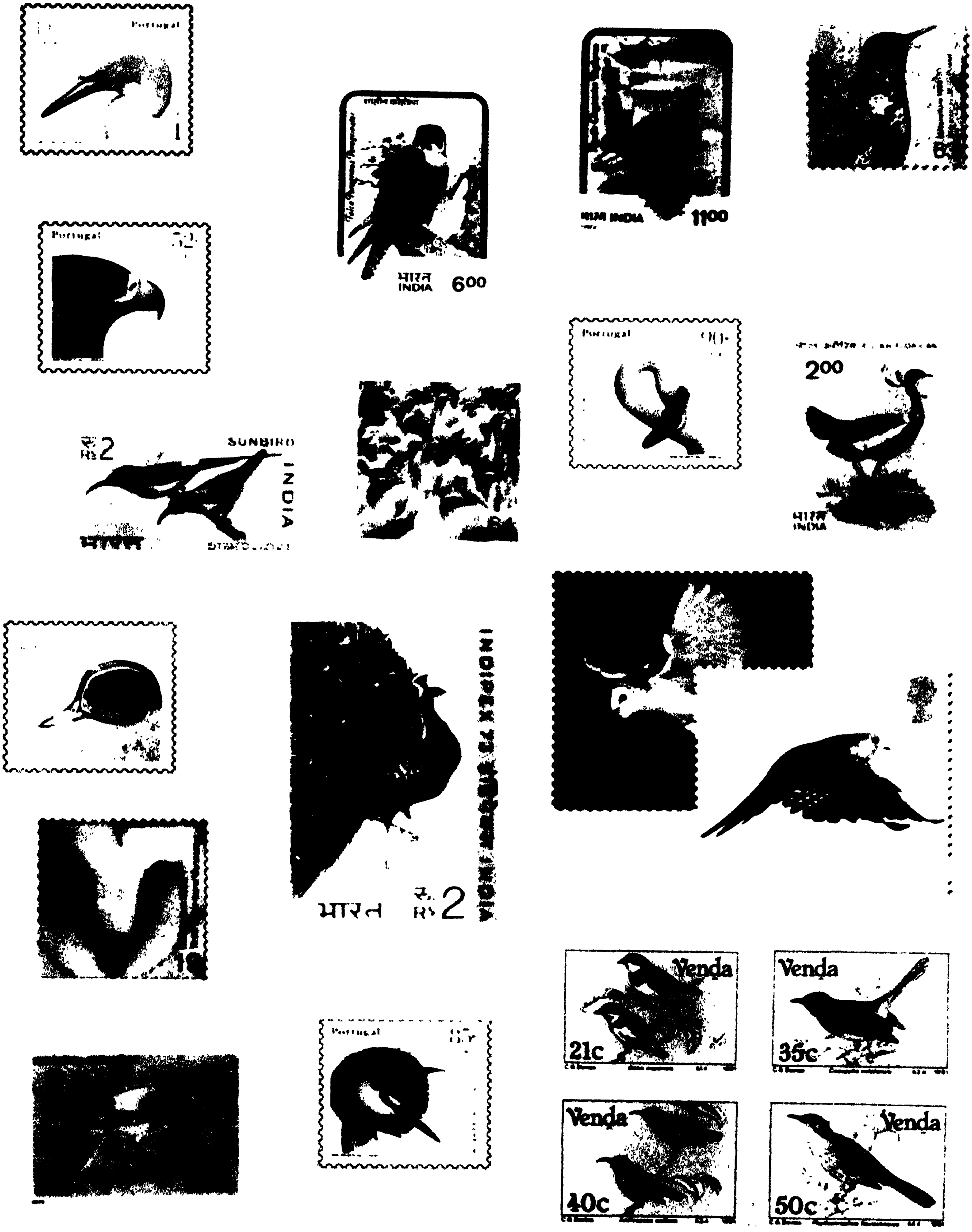

प्रेम मनमौजी
फोटो : के. आर. शर्मा

12504